केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क–bhartiyabasti@gmail.com
मो० 9450567450| 9336715406

दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम
सम्पर्क
मो० 9336715406
8400925463

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं० B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :47 अंक 261 गुरूवार 16 अप्रैल 2026 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

मनोनीत सभासदों को दिलायी शपथ

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रुधौली तहसील सभागार में नगर पंचायत रुधौली के लिए मनोनीत तीन सभासदों ने पद और गोपनीयता की शपथ ली। एसडीएम रुधौली मनोज प्रकाश ने रंजना सिंह, रोहित अग्रहरि और विजय नारायण तिवारी को शपथ दिलाई।

इस अवसर पर जिलाध्यक्ष विवेकानंद मिश्रा ने मनोनीत सभासदों से वार्डों में निर्वाचित सभासदों और अध्यक्ष के साथ समन्वय बनाकर नगर पंचायत के विकास कार्यों में सहयोग करने का आह्वान किया। नगर पंचायत अध्यक्ष धीरसेन निषाद ने सभी मनोनीत सभासदों को शपथ ग्रहण की बधाई दी और उनसे नगर पंचायत के विकास में योगदान देने की अपील की।

शपथ ग्रहण समारोह से पूर्व चेयरमैन ने मुख्य अतिथि का पुष्पगुच्छ और माला पहनाकर स्वागत किया। इस दौरान ईओ कीर्ति सिंह, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सत्येंद्र सिंह भोलू, रुधौली गन्ना समिति अध्यक्ष प्रदीप सिंह पिंकू, जिलामंत्री राकेश शर्मा, शशि भूषण सिंह, विजय कुमार पांडेय राजू, नीलम गौड़, मंडल अध्यक्ष सुजीत सोनी, रामउग्रह जायसवाल और प्रेम प्रकाश पटेल सहित कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

नौकरी के नाम पर 7 लाख की ठगी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। नौकरी दिलाने के नाम पर 7 लाख रुपये की ठगी का एक गंभीर मामला सामने आया है। यह प्रकरण गौर थाना क्षेत्र से जुड़ा है, जो तब उजागर हुआ जब पीड़ित को लंबे इंतजार के बाद भी नियुक्ति पत्र नहीं मिला और उसने संबंधित विभाग से जानकारी ली।

आवास विकास कॉलोनी, कोतवाली, बस्ती निवासी कुशाग्र श्रीवास्तव ने आरोप लगाया है कि अजय कुमार श्रीवास्तव और उनकी मां सुशीला देवी ने उन्हें सिंचाई विभाग में नौकरी दिलाने का झांसा दिया। आरोपियों ने विभिन्न माध्यमों से उनसे कुल 7 लाख रुपये ठग लिए।

आरोप है कि विपक्षी अजय कुमार श्रीवास्तव और सुशीला देवी ने कूटरचित तरीके से एक फर्जी चयन सूची तैयार कर वादी को भेजी थी। उन्होंने कुशाग्र श्रीवास्तव को मई 2025 में नियुक्ति पत्र दिलाने का आश्वासन भी दिया था।

समय बीतने के बावजूद जब नियुक्ति पत्र नहीं मिला, तो पीड़ित को संदेह हुआ। उन्होंने संबंधित विभाग से सत्यता की जांच की, जहां पूरा मामला फर्जी निकला। इसके बाद जब वादी ने अपने पैसे वापस मांगे, तो आरोपियों ने कथित तौर पर गाली–गलौज की और जान से मारने की धमकी भी दी।

इस संबंध में गौर थाना पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

पत्रकार को पितृ शोक

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। पत्रकार जीतेन्द्र यादव के पिता रामवृक्ष यादव के आकस्मिक निधन से जनपद के पत्रकारों मे शोक का माहौल है। पत्रकारों ने शोकसभा आयोजित कर दिवंगत को श्रद्धांजलि दी और शोकाकुल परिवार को दुख की इस घड़ी मे साहस प्रदान करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना किया। रामवृक्ष यादव शहीद सत्यवान सिंह स्टेडियम से सेवानिवृत्त हुये थे।

ट्रंप का दावा: ईरान को हथियार सप्लाई नहीं करेगा चीन

वाशिंगन (आभा)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बुधवार को चीन को लेकर बड़ा दावा किया है। उन्होंने कहा है कि चीन ईरान को हथियार सप्लाई नहीं करने पर सहमत हो गया है। उन्होंने कहा कि उन्होंने यह मुद्दा चीन के सामने उठाया था, जिस पर उन्हें भरोसा मिला है। ट्रंप का कहना है कि कुछ हफ्तों में जब वह चीन जाएंगे तो राष्ट्रपति शी जिनपिंग उन्हें गले लगा लेंगे। 'ट्रुथ सोशल' प्लेटफॉर्म पर एक पोस्ट में, ट्रंप ने कहा कि बीजिंग होर्मुज स्ट्रेट को खुला रखने की उनकी कोशिशों का समर्थन कर रहा है।

ट्रंप ने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट किया, चीन बहुत खुश है कि मैं होर्मुज को हमेशा के लिए खोल रहा हूं। मैं यह उनके लिए भी कर रहा हूं और पूरी दुनिया के लिए भी। ऐसी स्थिति फिर कभी नहीं आएगी। वे ईरान को हथियार न भेजने पर सहमत हो गए हैं। जब मैं कुछ हफ्तों में वहां जाऊंगा, तो राष्ट्रपति शी मुझे गले लगाएंगे। हम मिलकर समझदारी से और बहुत अच्छे से काम कर रहे हैं। क्या यह लड़ने से बेहतर नहीं है? लेकिन याद रखना, अगर जरूरत पड़ी तो हम लड़ने में भी बहुत माहिर हैं, किसी और से कहीं ज्यादा बेहतर।''

इसके अलावा, ट्रंप ने फॉक्स बिजनेस नेटवर्क के कार्यक्रम मॉर्निंग्स विद मारिया में कहा कि अमेरिका एक घंटे के भीतर ईरान के सभी पुलों और बिजली संयंत्रों को तबाह कर सकता है। उल्लेखनीय है कि अमेरिका और ईरान के बीच कुछ दिन पहले पाकिस्तान के इस्लामाबाद में हुई अहम शांति वार्ता विफल हो गई, जिसके बाद फिर से वार्ता का नया दौर शुरू होने की उम्मीद है। ईरान व अमेरिका के बीच पिछले डेढ़ महीने से युद्ध चल रहा है। हालांकि, अभी दो हफ्ते का सीजफायर है, जिसकी वजह से दोनों तरफ से बड़े हमले रुके हुए हैं।

रिपोर्ट्स में सामने आया था कि चीन ईरान को हथियार देकर इस युद्ध में मदद कर रहा है। बीजिंग एयर डिफेंस सिस्टम पहुंचाने की योजनाओं पर काम कर रहा था – जिसमें ड ।छच।वे के नाम से जानी जाने वाली कंधे से दागी जाने वाली एंटी–एयर मिसाइलें भी शामिल हैं। इन्हें संभवतः किसी तीसरे देशों के रास्ते भेजा जा सकता था। इसके अलावा, फाइनेंशियल टाइम्स की एक जांच के अनुसार, हालिया संघर्ष के दौरान ईरान ने मध्य पूर्व में अमेरिकी सैन्य ठिकानों की निगरानी करने और उन्हें निशाना बनाने के लिए चीन निर्मित एक जासूसी उपग्रह का इस्तेमाल किया। हालांकि, चीन ने इससे इनकार किया है।

शिक्षा, रोजगार, यूजीसी के सवाल को लेकर मेधा ने दिया धरना

–बंद हो शिक्षा का बाजारीकरण, मिले समान अवसर–दीनदयाल

–भारतीय बस्ती संवाददाता

बस्ती। बुधवार को मेधा के राष्ट्रीय प्रवक्ता, पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष दीन दयाल त्रिपाठी के संयोजन में यूजीसी का नया नियम वापस लिये जाने की मांग को लेकर बापू प्रतिमा के समक्ष धरना दिया। कहा कि सर्वोच्च न्यायालय ने भले ही नये नियमों पर रोक लगा दिया है किन्तु छात्रों और अभिभावकों में आशंका बनी हुई है। सरकार और यूजीसी को इस पर स्पष्टीकरण देना चाहिये।

मेधा के राष्ट्रीय प्रवक्ता दीन दयाल त्रिपाठी ने शिक्षा बचाओ–भविष्य बचाओ नारे के साथ शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में सवर्णों को भी अन्य वर्ग के लोगों की तरह ही समान अवसर देने की मांग की। कहा कि मेधा लगातार शिक्षा के सवाल और उसके बाजारीकरण के विरोध में संघर्षरत है। यह आन्दोलन चरणबद्ध ढंग से जारी रहेगा। कहा कि यूजीसी की नीतियां शिक्षा की गुणवत्ता और समान अवसर दोनों को प्रभावित कर रही हैं। यदि समय रहते सुधार नहीं किया गया, तो इसका सीधा असर आने वाली पीढ़ियों पर पड़ेगा। यह केवल नीति का सवाल नहीं, बल्कि देश के भविष्य का प्रश्न है। इसलिए समाज के सभी वर्गों को एकजुट होकर आवाज उठानी चाहिए। यह लड़ाई समान अवसर और न्याय की है।

धरने में मुख्य रूप से प्रशान्त पाण्डेय, रामरीका पाण्डेय, राहुल त्रिपाठी, प्रतीक मिश्र, गिरीश चन्द्र गिरी, अंकित पाण्डेय, अमरनाथ यादव, विपुल सिंह, पद्युम्न उपाध्याय, उमेश उपाध्याय 'गग्गर' आदि शामिल रहे।

पुलिस की मौजूदगी में जेसीबी लगाकर गिरा दिया दलितों का मकान

–दोषियों के विरूद्ध कार्रवाई, दलितों को मकान बनाकर देने की मांग

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मुण्डेरवा थाना क्षेत्र के रामपुर निवासी दलित राम अवध पुत्र गोबरी, राजेन्द्र पुत्र राम वेलास, प्रेमसागर, रामदीन पुत्रगण रामफेर के कच्चे–पक्के मकान को न्यायालय के निर्णय की अवमानना करते पूर्व ग्राम प्रधान भू–माफिया अब्दुल वहीद की शह पर पुलिस बल और की मौजूदगी में जे.सी.बी. लगाकर ध्वस्त करा दिया गया। इसे लेकर नागरिकों में रोष है। बुधवार को हिन्दू युवा वाहिनी जिला आई.टी. सेल संयोजक धर्मेन्द्र कुमार के साथ पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं ने मण्डलायुक्त को पत्र देकर मामले में निष्पक्ष जांच और दोषियों के विरूद्ध कार्रवाई की मांग किया गया।

पत्र में कहा गया है कि लेखपाल वीरेन्द्र कुमार पाण्डेय, नायब तहसीलदार, दारोगा और पुलिस कर्मियों ने गत 13 अप्रैल को जिलाधिकारी और उच्च न्यायालय के निर्णय की अवमानना करते हुये दलितों के कच्चे–पक्के मकान को ध्वस्त करा दिया। उक्त लोगों ने गाटा संख्या 611 में गांव के ही अप्पू, सुभाष, बब्लू पुत्रगण मुन्नीलाल का अवैध छप्पर रखवा दिया। मांग किया कि दोषियों के विरूद्ध मुकदमा पंजीकृत कराकर दलितों को घर बनवाकर दिया जाय।

सीबीएसई हाई स्कूल में अपराइज के छात्रों ने बनाया कीर्तिमान

-शिक्षकों ने मिठाई खिलाकर बढाया मेधावी छात्रों का हौसला

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती ।अपराइज टयुटोरियल्स के छात्र–छात्राओं ने सीबीएसई हाई स्कूल में सफलता का कीर्तिमान बनाया। बुधवार को सफल छात्रों को मिठाई खिलाकर निदेशक और शिक्षकों ने प्रसन्नता व्यक्त किया।

निदेशक अरूण कुमार और ऋषभ राज ने बताया कि हाई स्कूल के परीक्षा परिणामों में अंशिका चौधरी ने सर्वाधिक 93 प्रतिशत, आयुष 93 सोनम राव 91, आकृति श्रीवास्तव, 90, अभिमन्यु पाण्डेय 90 और यशस्वी चौधरी ने 89 प्रतिशत अंक प्राप्त किया। सफल छात्रों को मिठाई खिलाकर खुशियों को साझा करने वालों में मुख्य रूप से अपराईज परिवार के प्रधानाचार्य कुन्दन कुमार रंजन, मिथलेश कुमार, विनीत सिंह, अहमदुल्लाह सिद्दीकी, अरविन्द कुमार, सूरज चौधरी, इन्द्रासन, अरसलान, शिवराम, राजेश कुमार, श्यामजी, अजय कुमार आदि ने छात्रों का उत्साहवर्धन किया।

सरकार की वादा खिलाफी से नाराज ग्रामीण बैंक कर्मी करेंगे आन्दोलन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में खास पहचान रखने वाले क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है, जहां एक ओर भारत सरकार ग्रामीण बैंकों को प्रदेश स्तर पर मिला कर इन्हें मजबूत आर्थिक आधार दे रही है, वहीं दूसरी ओर इनमें काम करने वाले लाखों अधिकारियों और कर्मचारी की जायज मांगों को भी नजर अंदाज किया जा रहा है।

भारत सरकार पर वादा खिलाफी का आरोप लगाते हुए ग्रामीण बैंक कर्मियों के सबसे बड़े संगठन ऑल इंडिया रीजनल रूरल बैंक इंप्लाइज एसोसिएशन (अरेबिया) ने भारत सरकार को हड़ताल की नोटिस भेज कर देश व्यापी आंदोलन की घोषणा की है।

यह जानकारी देते हुये अरेबिया के बरिष्ठ नेता कामरेड के.के. श्रीवास्तव ने बताया कि संगठन के महासचिव कामरेड येस बैंकटेश्वर रेडडी ने सभी यूनिटों को भेजे गए अपने पत्र में कहा है कि भारत सरकार ग्रामीण बैंक कर्मचारियों के पदोन्नति नियमों में संशोधन, नई मानव श्रम नीति का क्रियान्वयन, 25000 से अधिक खाली पदों पर काम कर रहे अस्थाई कर्मचारियों का नियमितिकरण तथा 12 वें वेतन समझौते से जुड़े तमाम लाभ देने के लिए जल्दी आदेश जारी करने का भरोसा दिया था लेकिन भारत सरकार इसमें विफल रही है, जिसके कारण कर्मचारियों के आक्रोश को देखते हुए 12 अप्रैल को यूनियन पदाधिकारियों की एक बैठक संपन्न हुई जिसमें हड़ताल पर जाने का निर्णय लिया गया है।जिसकी जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि दिनांक 1 मई 2026 से नियमानुसार कार्य, बैंकों के व्हाट्सएप ग्रुप का बहिष्कार किया जाएगा तथा दिनांक 6 मई को सभी 28 ग्रामीण बैंकों के मुख्यालयों पर धरना दिया जाएगा । देश भर के सांसदों को ज्ञापन प्रेषित किए जाएंगे और नाबार्ड और रिजर्व बैंक के प्रमुख अधिकारियों को भी मांगों का ज्ञापन सौंपा जाएगा ।अरेबिया आगामी संसद सत्र के दौरान जंतर मंतर पर धरने का आयोजन भी करेगी और इसके बाद एक दिन की देश व्यापी हड़ताल भी मांगों पर ध्यानाकर्षण करने के लिए की जाएगी।

नवजात की मौत मामले में निजी मैक्स हास्पिटल सील

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

कुदरहा सीएचसी में प्रसव के दौरान नवजात की मौत के चर्चित मामले में स्वास्थ्य विभाग ने बुधवार को बड़ी कार्रवाई की है। जांच के बाद संबंधित निजी श्मैक्स हॉस्पिटलश को सील कर दिया गया है, जबकि लापरवाही के आरोप में स्टाफ नर्स कुसुम के खिलाफ निलंबन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

राज्य स्तरीय जांच टीम की पड़ताल में बगल स्थित निजी अस्पताल में गंभीर अनियमितताएं पाई गई थीं। इन्हीं अनियमितताओं के आधार पर प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई करते हुए अस्पताल को सील किया। अधिकारियों का मानना है कि बिना मानक के इलाज और प्रक्रियाओं में लापरवाही इस पूरे प्रकरण में अहम कड़ी रही है। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. राजीव निगम ने बताया कि सीएचसी कुदरहा की स्टाफ नर्स कुसुम के खिलाफ प्रथम दृष्टया लापरवाही सामने आई है। उनके निलंबन के लिए शासन को पत्र भेज दिया गया है। शासन स्तर से स्वीकृति मिलने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

यह मामला उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक के संज्ञान में आने के बाद एक राज्य स्तरीय टीम ने सीएचसी, निजी नर्सिंग होम और मेडिकल कॉलेज में व्यापक जांच की थी। टीम ने जांच के दौरान सीसीटीवी फुटेज भी कब्जे में लिए थे। पीड़ित परिवार न्याय की उम्मीद लगाए बैठा है। प्रशासनिक कार्रवाई के बाद अब आगे की जांच रिपोर्ट और दोषियों पर होने वाली सख्त कार्रवाई पर सभी की नजरें टिकी हैं।

सफाईकर्मी के हत्यारों के गिरफ्तारी की मांग: संघ ने डीएम, एसपी को सौंपा पत्र, दिया आन्दोलन की चेतावनी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती ।बुधवार को उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ जिलाध्यक्ष अजय कुमार आर्य के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल ने सफाईकर्मी विनय कुमार वर्मा के हत्यारों के गिरफ्तारी की मांग को लेकर एसपी को पत्र सौंपा। इसके बाद जिलाधिकारी को सम्बोधित पत्र डीएम के प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा गया।

पत्र देने के बाद अजय कुमार आर्य ने बताया कि छावनी थाना क्षेत्र के अकला निवासी सफाईकर्मी विनय कुमार वर्मा हर्रैया विकास खण्ड क्षेत्र के बसदेवा कुंवर गांव में तैनात थे। गत 12 अप्रैल को गांव के निकट उनकी निर्मम हत्या कर दी गई। पुलिस ने अभी तक हत्यारों को गिरफ्तार नहीं किया है। मांग किया कि दोषियों को गिरफ्तार कर कड़ा दण्ड दिलाया जाय। अजय आर्य ने बताया कि पुलिस अधीक्षक ने प्रतिनिधि मण्डल को आश्वासन दिया है कि अति शीघ्र हत्यारों को गिरफ्तार कर लिया जायेगा। चेतावनी दिया कि यदि 17 अप्रैल तक हत्यारे गिरफ्तार न हुये तो 18 अप्रैल को जनपद के सफाई कर्मचारी विरोध प्रदर्शन कर डीएम को ज्ञापन देंगे।

प्रतिनिधि मण्डल में मुख्य रूप से संघ के मंत्री मंशाराम चौधरी, कोषाध्यक्ष अशोक चौहान, संगठन मंत्री अमित चक्रवर्ती, लेखा सम्प्रेक्षक भरत कुमार यादव, सन्तोष कुमार, समयदीन यादव, उमेश चौधरी आदि शामिल रहे।

विमल कुमार आनन्द अध्यक्ष, सुरेन्द्र कुमार मंत्री बने

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

–अधिवेशन में गूंजा पुरानी पेंशन, आठवे वेतन आयोग का मुद्दा

बस्ती ।बुधवार को कलेक्ट्रेट परिसर स्थित राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद कार्यालय पर पशुधन प्रसार अधिकारी संघ का द्विवार्षिक अधिवेशन और चुनाव सम्पन्न हुआ। चुनाव अधिकारी डॉ. फजील खान की देख रेख में सर्वसम्मत से विमल कुमार आनन्द अध्यक्ष, विजय कुमार उपाध्यक्ष, सुरेन्द्र कुमार मंत्री, भानू प्रताप सिंह संयुक्त मंत्री, रामेन्द्र जायसवाल कोषाध्यक्ष, शिवदास लेखा सम्प्रेक्षक निर्वाचित घोषित किये गये।

चुनाव से पूर्व द्विवार्षिक अधिवेशन को सम्बोधित करते हुये राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के कार्यवाहक जिलाध्यक्ष राम अधारपाल ने कहा कि देश और प्रदेश के कर्मचारी कठिन दौर से गुजर रहे हैं। उनकी जायज मांगों पर भी विचार नहीं किया जा रहा है। पुरानी पेंशन बहाल किये जाने और आठवे वेतन आयोग को शीघ्र लागू किये जाने को लेकर हमें निरन्तर संघर्ष तेज रखना होगा। उन्होने पशुधन प्रसार अधिकारी संघ के नव निर्वाचित पदाधिकारियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलायी। अध्यक्षता करते हुये रणजीत उपाध्याय ने एकजुट होकर संगठन की मजबूती पर जोर दिया। नव निर्वाचित अध्यक्ष विमल कुमार आनन्द ने कहा कि स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु शीघ्र अधिकारियों से वार्ता के साथ ही प्रदेश नेतृत्व से वेतन विसंगति की समस्या का समाधान कराये जाने का आग्रह किया जायेगा। परिषद के जिला मंत्री तौलू प्रसाद ने कहा कि कर्मचारियों के जनपद स्तरीय समस्याओं के समाधान हेतु निरन्तर प्रयास जारी है।

द्विवार्षिक अधिवेशन में मुख्य रूप से राम सुभाष चौधरी, रजत सिंह, विनोद कुमार मिश्र, राम प्रसाद चौधरी, विनोद कुमार मिश्र, दिनेश चन्द्र, महेन्द्र कुमार, सुशील शुक्ल, संजय कुमार, जितेन्द्र विश्वकर्मा, नुरूल हुदा, धर्मेन्द्र सिंह, महेन्द्र कुमार, अरविन्द कुमार, आशुतोष सिंह, अतुल पाण्डेय, अबरार अहमद अंसारी, दिनेश कुमार, गौरव सिंह, रजत सोनकर, अभिषेक कुमार, अरूण शुक्ल, अविनाश कुमार के साथ ही विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी, कर्मचारी शामिल रहे।

बाबा साहब की जयन्ती पर ग्रामीण क्षेत्रों में उमडे लोग

–भारतीय बस्ती संवाददाता

बस्ती । भारत रत्न बाबा साहब डा. भीमराव अम्बेडकर के जयन्ती अवसर पर ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक आयोजन किये गये। इसी कड़ी में भीम पाठशाला समिति द्वारा साऊंघाट विकास खण्ड के कुर्थिया अम्बेडकर पार्क से नरियांव, खझौला, परसा जाफर, सोनहटी, बिल्लौर, पटखौली, कनैली, पकरी नासिर, परसा हज्जाम, मुजहना, जमोहे, देवरिया माफी, ओडवारा, हटवा शुक्ल, बटेला, गंगाराम मंझरिया, तिलकपुर, प्लास्टिक काम्पलेक्स, मलिकपुरवा, बायपोखर, मकबूलगंज होते हुये संस्थापक अध्यक्ष रामशंकर आजाद, संस्थापक कोषाध्यक्ष मूलचंद आजाद के संयोजन में भुडली जमोहरा पहुंची। हजारों की संख्या में लोग 'बाबा साहब अमर रहे' बाबा तेरा मिशन अधूरा, हम सब मिलकर करेंगे पूरा, जयभीम आदि के नारे लग रहे थे।

संस्थापक अध्यक्ष रामशंकर आजाद, मूलचंद आजाद, विक्रम गौतम एडवोकेट, रंजीत कुमार गौतम, जिलाध्यक्ष राना प्रवीण कुमार आदि ने कहा कि बाबा साहब आजीवन छूआछूत, भेदभाव के विरोध में लडे और दबे कुचले समाज को शिक्षित बनो, संघर्ष करो का मंत्र दिया। जब तक समाज में विषमता, भेदभाव है बाबा साहब सदैव प्रासंगिक रहेंगे। मानवता ही उनके लिए सबसे बड़ा धर्म था। समाज के लोगों को उनके जीवन से प्रेरणा लेने की जरूरत है। मजदूरों और किसानों के लिए उनकी सोच हमेशा सकारात्मक रहेगी।

बाबा साहब जयन्ती अवसर पर निकली प्रभातफेरी में मुख्य रूप से अनिल कुमार गौतम, उदयचन्द, ग्राम प्रधान इरफान अहमद, सोनू सिंह गौतम, रंगीलाल, विकास कुमार, विशाल कुमार, पवन कुमार, राहुल कुमार, फूल कुमारी, अंजू गौतम, वंदना, पूजा के साथ ही हजारों की संख्या में लोग शामिल रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 16 अप्रैल 2026 गुरूवार

सम्पादकीय

बढ़ती मंहगाई

यह विचित्र बात है कि एक ओर सरकार महंगाई को नियंत्रण में रखने का दावा करती है, तो दूसरी ओर आवश्यक वस्तुओं की कीमतें लगातार बढ़ती जा रही हैं। इसका सीधा असर आम आदमी पर जरूरी खर्च में कटौती और आर्थिक परेशानियों के रूप में देखने को मिल रहा है। जब आय के साधन सीमित हों, तो आम आदमी की यही अपेक्षा होती है कि जरूरी वस्तुओं के दाम उसकी पहुंच में हों, ताकि परिवार के भरण–पोषण का संकट पैदा न हो।

मगर हाल के वर्षों में आमदनी उस स्तर पर नहीं बढ़ी है, जितनी तेजी से वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी हुई है। सरकार की ओर से सोमवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, खुदरा महंगाई मार्च में बढ़कर 3.4 फीसद हो गई, जबकि फरवरी में यह 3.2 फीसद के स्तर पर थी। खबरों के मुताबिक, पश्चिम एशिया में संघर्ष से उत्पन्न संकट के कारण खुदरा महंगाई में वृद्धि हुई है। मगर सवाल है कि अगर सरकार आवश्यक वस्तुओं की कीमतों को नियंत्रित या स्थिर करने के लिए उचित कदम उठा रही है, तो फिर महंगाई में उछाल कैसे आ रहा है?

भारत में बढ़ती महंगाई (मुद्रास्फीति) आम नागरिकों के लिए एक गंभीर आर्थिक संकट है, जिसने रसोई के बजट और जीवनयापन की लागत को बढ़ा दिया है। फरवरी 2026 में भारत की खुदरा महंगाई दर बढ़कर 3.21: हो गई है, और आने वाले महीनों में इसके 5: से ऊपर जाने का अनुमान है, जो मुख्य रूप से खाद्य पदार्थों और ईंधन की ऊंची कीमतों के कारण है। आम नागरिकों की क्रय शक्ति कम हो गई है, जिससे निम्न और मध्यम वर्ग के परिवारों का घरेलू बजट बिगड़ गया है। ऐसे में पेट्रोल–डीजल पर टैक्स कम किया जाए, खाद्य पदार्थों का बफर स्टॉक बढ़ाया जाए और आपूर्ति श्रृंखला को दुरुस्त किया जाए।

यह बात छिपी नहीं है कि देश में सामाजिक स्तर पर आर्थिक असंतुलन एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आया है। रोजगार और आय के मामले में देश की बड़ी आबादी के लिए स्थिति अब भी संतोषजनक नहीं है। आमदनी में स्थिरता और घटती क्रयशक्ति की स्थिति में जब आवश्यक वस्तुओं पर आम लोगों का खर्च थोड़ा भी बढ़ता है, तो उनके लिए परेशानियां पैदा होना स्वाभाविक है। दरअसल, मार्च में महंगाई के आंकड़ों में बढ़ोतरी का मुख्य कारण खाद्य पदार्थों की कीमतों में इजाफा रहा।

रिजर्व बैंक नीति तय करते वक्त खुदरा महंगाई को ही आधार बनाता है। खुदरा महंगाई से इस बात का पता चलता है कि उपभोक्ताओं की खपत और खर्च की स्थिति क्या है। यही कारण है कि रिजर्व बैंक अपनी नीति तय करते वक्त खुदरा महंगाई को ही आधार बनाता है। सरकार का दावा है कि खुदरा महंगाई अभी रिजर्व बैंक के चार फीसद के औसत अनुमान से नीचे बनी हुई है। मगर, यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि अगर महंगाई दर चार फीसद के दायरे से ऊपर जाती है, तो फिर कर्ज के सस्ता होने की उम्मीद भी कम हो जाती है।

आर्थिक विशेषज्ञों का कहना है कि मार्च में फरवरी की तुलना में महंगाई दर का बढ़ना पश्चिम एशियाई संकट के शुरुआती प्रभाव का संकेत है। यानी अमेरिका–इजराइल और ईरान के बीच युद्ध का मोर्चा फिर से खुलता है और यह स्थिति लंबे समय तक रहती है, तो आवश्यक वस्तुओं के दाम किस तेजी से बढ़ेंगे, इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, मार्च में आलू–प्याज और कुछ दालों की कीमतों की महंगाई दर घटी है, लेकिन सोने–चांदी के आभूषण, नारियल, टमाटर और फूलगोभी के दामों में भारी बढ़ोतरी हुई।

बिजली, गैस और अन्य ईंधन श्रेणी में खुदरा महंगाई मार्च में 1.65 फीसद रही, जबकि फरवरी में यह 1.52 फीसद के स्तर पर थी। यानी आम लोगों के लिए राहत कम और मुश्किलें ज्यादा बढ़ी हैं। यही नहीं, शहरी इलाकों में 3.11 फीसद की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में महंगाई दर 3.63 फीसदी रही, जहां रोजगार और आय के साधन सीमित होते हैं। ऐसे में इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि अगर सरकार ने महंगाई पर नियंत्रण के लिए ठोस उपाय नहीं किए, तो आने वाले दिनों में यह संकट और ज्यादा गहराएगा।

युद्ध, बच्चे और बदलती सामाजिक चेतना

–डॉ. रीतू सारस्वत–

प्रश्न यह नहीं है कि युद्ध कहां और क्यों हो रहे हैं, बल्कि यह है कि उन बच्चों के प्रति हमारी जिम्मेदारी क्या है, जिन्हें हम स्वयं इस संसार में लाते हैं, और जब हम उनके जीवन और सुरक्षा की रक्षा नहीं कर पाते, तब सभ्य समाज होने का हमारा दावा स्वतरू ही कठघरे में खड़ा हो जाता है।

हाल ही में नई दिल्ली स्थित ईरान दूतावास में 'एंजेल्स ऑफ मिनाब' नाम से एक प्रदर्शनी आयोजित की गई है, जिसमें उन छोटे बच्चों की बनाई तस्वीरों को प्रदर्शित किया गया है, जो ईरान के मिनाब शहर के एक स्कूल के मलबे से बरामद हुई थीं। ये चित्र उस त्रासदी के साक्ष्य हैं, जिसमें एक हमले के दौरान अनेक बच्चों और अन्य नागरिकों की जान चली गई। यह प्रदर्शनी केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का मंच नहीं है, बल्कि उन बच्चों के मौन को दर्ज करने का माध्यम है, जो इस घटना के बाद बोलने के लिए जीवित नहीं रहे। इन चित्रों को देखने पर यह स्पष्ट होता है कि वयस्कों के राजनीतिक और सैन्य संघर्षों के बीच बच्चों का जीवन सबसे पहले और सबसे आसानी से नष्ट होता है। यह स्थिति किसी एक घटना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक व्यवस्था का संकेत है, जिसमें बच्चों का अस्तित्व और सुरक्षा लगातार उपेक्षित रहते हैं। यह केवल एक घटना का विवरण नहीं, बल्कि उस व्यापक वास्तविकता की ओर संकेत है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए आकलन भी रेखांकित करते हैं।

यूनिसेफ द्वारा जारी हालिया आकलन में, 'यूनिसेफ स्टैंड्स विद ईरान्स चिल्ड्रेन ऐज सीजफायर ऑफर्स पाथ टू रिकवरी' के संदर्भ में यह स्पष्ट रूप से दर्ज किया गया है कि वर्ष 2026 के आरंभिक महीनों में ईरान में दर्ज सैन्य हमलों और उनसे उत्पन्न मानवीय परिस्थितियों के दौरान 1100 से अधिक बच्चे मारे गए या घायल हुए हैं, और इन घटनाओं के प्रभाव बच्चों के जीवन पर लंबे समय तक बने रहने की आशंका है। यूनिसेफ ने यह भी रेखांकित किया है कि इन परिस्थितियों का सबसे अधिक और सबसे गहरा असर बच्चों पर पड़ा है। वे न केवल शारीरिक क्षति का सामना कर रहे हैं, बल्कि भय, असुरक्षा और दीर्घकालिक मनोवैज्ञानिक आघात के साथ जीवन जीने के लिए विवश हैं। यूनिसेफ के अनुसार, जिन बच्चों का स्थान विद्यालयों और सुरक्षित पारिवारिक वातावरण में होना चाहिए था, वे आज विस्थापन, अस्थिरता और बुनियादी सुविधाओं के अभाव के बीच जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अनेक बच्चों ने अपने परिजनों को खो दिया है और जो जीवित हैं, उनके लिए सामान्य जीवन की संभावना भी गंभीर रूप से बाधित हो चुकी है। यह स्थिति केवल एक मानवीय संकट नहीं, बल्कि उस वैश्विक व्यवस्था की गहरी विफलता को भी रेखांकित करती है, जो बच्चों की सुरक्षा के दावों के बावजूद उन्हें सबसे अधिक असुरक्षित छोड़ देती है। यह स्थिति केवल वर्तमान परिदृश्य का संकेत नहीं देती, बल्कि उस गहरी मानवीय त्रासदी की ओर भी इंगित करती है, जिसे सभ्य समाज ने अपनी आकांक्षाओं की आड़ में उपेक्षित कर दिया है। वर्ष 1956 में प्रकाशित पुस्तक 'नाइट' इस त्रासदी को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में सामने आती है, जिसमें एली विजेल ने अपने जीवन के उन अनुभवों को दर्ज किया है, जिन्हें उन्होंने मात्र 15 वर्ष की आयु में स्वयं जिया। ट्रांसिल्वेनिया के सिघेट शहर में जन्मे इस बालक को 1944 में उसके परिवार सहित उसके निवास–स्थान से हटाकर ऑशविट्ज और बाद में बुचेनवाल्ड जैसे यातना शिविरों में भेज दिया गया। यह कृति केवल एक व्यक्ति की स्मृतियों का संकलन नहीं है, बल्कि उस व्यापक मानवीय संकट का प्रमाण है, जिसमें एक बालक का बचपन, विश्वास और जीवन–बोध एक साथ विखंडित हो जाते हैं।

विजेल लिखते हैं कि 'मैं उन लपटों को कभी नहीं भूल सकता, जिन्होंने मेरे विश्वास को सदा के लिए समाप्त कर दियाय मैं उस सन्नाटे को कभी नहीं भूल सकता, जिसने मुझसे जीवन की इच्छा छीन लीय और मैं उन क्षणों को कभी नहीं भूल सकता, जिन्होंने मेरी आत्मा को नष्ट कर मेरे सपनों को राख में बदल दिया।' यह कथन केवल एक बालक की व्यक्तिगत स्मृति नहीं है, बल्कि उन असंख्य बच्चों की सामूहिक पीड़ा का प्रतिनिधित्व करता है, जो युद्ध और हिंसा के बीच अपने अस्तित्व से पहले ही वंचित हो जाते हैं। युद्ध की त्रासदी का एक अन्य आयाम उस समय सामने आता है, जब हम 'ए डायरी ऑफ अ यंग गर्ल' को देखते हैं, जिसे ऐन फ्रैंक ने 1942 से 1944 के बीच, लगभग दो वर्षों तक, उस अवधि में लिखा जब वह अपने परिवार के साथ नाजी उत्पीड़न से बचने के लिए एक बंद स्थान में छिपकर रहने के लिए विवश थी। लगभग 13 से 15 वर्ष की आयु के बीच लिखी गई यह डायरी एक ऐसी बालिका के जीवन का सजीव दस्तावेज है, जो निरंतर भय, असुरक्षा और सीमित परिस्थितियों के बीच भी अपने सामान्य जीवन और सपनों को बनाए रखने का प्रयास कर रही थी। ऐन फ्रैंक की मृत्यु के उपरांत यह डायरी 1947 में प्रकाशित हुई, और यह केवल एक बालिका की स्मृतियों का संकलन भर नहीं है, बल्कि उन असंख्य बच्चों के जीवन की प्रतिनिधि कथा है, जिन्हें युद्ध ने असमय ही समाप्त कर दिया।

इसी डायरी में वह लिखती है, 'आई वांट टू गो ऑन लिविंग इवन आफ्टर माई डेथ' (मैं अपनी मृत्यु के बाद भी जीवित रहना चाहती हूं) यह केवल एक बालिका की साधारण अभिलाषा नहीं है, बल्कि उन असंख्य अधूरे जीवनों की प्रतिध्वनि है, जिन्हें युद्ध ने पूर्ण होने का अवसर ही नहीं दिया। यह पंक्ति इस तथ्य को अत्यंत स्पष्टता से सामने लाती है कि युद्ध बच्चों से केवल उनका वर्तमान ही नहीं छीनता, बल्कि उनके भविष्य की संभावनाओं को भी जन्म लेने से पहले ही समाप्त कर देता है।

संयुक्त राष्ट्र और यूनिसेफ द्वारा 2023 में जारी रिपोर्ट 'मोअर दैन 300,000 ग्रेव वायलेशन्स अगेंस्ट चिल्ड्रेन इन कॉन्फ्लिक्ट वेरिफाइड वर्ल्डवाइड ओवर द पास्ट 18 इयर्स' के अनुसार, 2005 से 2023 के बीच कम से कम 1,20,000 बच्चे युद्ध में मारे गए या गंभीर रूप से घायल हुए हैंकृअर्थातः औसतन हर दिन लगभग 20 बच्चे। इसके साथ ही, यूनिसेफ द्वारा 2024 में जारी आकलन 'नॉट अ न्यू नॉर्मल रू 2024 इज वन ऑफ द वर्स्ट इयर्स फॉर चिल्ड्रेन इन कॉनफ्लिक्ट' यह संकेत करता है कि यह स्थिति सुधरने के बजाय और अधिक गंभीर होती जा रही है।

ये आंकड़े केवल संख्याएं नहीं हैं, बल्कि उन जीवनों का मौन साक्ष्य हैं, जिन्हें अपना जीवन जीने का अवसर ही नहीं दिया गया। यह स्थिति केवल विफल नीतियों का परिणाम नहीं है, बल्कि उन सामूहिक संघर्षों और आकांक्षाओं का भी प्रतिबिंब है, जिनके बीच बच्चों का जीवन बार–बार उपेक्षित होता है। जब युद्ध और सत्ता के प्रश्न प्रमुख हो जाते हैं, तब बच्चों की सुरक्षा और उनका अस्तित्व स्वाभाविक रूप से हाशिये पर चला जाता है। यह प्रवृत्ति इस बात की ओर संकेत करती है कि हमारी प्राथमिकताओं का निर्धारण ही कहीं न कहीं त्रुटिपूर्ण है, जहां भविष्य का प्रतिनिधित्व करने वाले बच्चों को वर्तमान की जटिलताओं के बीच अनदेखा कर दिया जाता है। अंततः प्रश्न यह नहीं है कि युद्ध कहां और क्यों हो रहे हैं, बल्कि यह है कि उन बच्चों के प्रति हमारी जिम्मेदारी क्या है, जिन्हें हम स्वयं इस संसार में लाते हैंय और जब हम उनके जीवन और सुरक्षा की रक्षा नहीं कर पाते, तब सभ्य समाज होने का हमारा दावा स्वतरू ही कठघरे में खड़ा हो जाता है।

–लेखिका समाजशास्त्री हैं।

युवा भारत के लिये बेरोजगारी की चुनौती

–अमित शर्मा–

भारत को दुनिया की सबसे युवा आबादी वाले देशों में गिना जाता है। लेकिन यही युवा शक्ति आज बेरोजगारी की गंभीर चुनौती से जूझ रही है। देश के बड़े शहरों की चमकदार सड़कों से लेकर छोटे कस्बों और तंग गलियों तक, काम की तलाश में भटकते युवा मिल जाएंगे। यह स्थिति केवल आर्थिक चिंता नहीं है, बल्कि सामाजिक असंतुलन और भविष्य की अनिश्चितता का संकेत भी है। बेरोजगारी का सवाल अब व्यक्तिगत समस्या से बढ़कर राष्ट्रीय विमर्श का केंद्र बन चुका है।

राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध आंकड़े इस संकट की गंभीरता को और स्पष्ट करते हैं। विभिन्न श्रम सर्वेक्षणों और आर्थिक आकलनों के अनुसार, भारत में बेरोजगारी दर पिछले कुछ वर्षों में 7 से 8 प्रतिशत तक चली गई है, जबकि 15 से 29 आयु वर्ग के युवाओं में यह दर 15 से 20 प्रतिशत तक पहुंच रही है। राज्य स्तर पर स्थिति और भी चिंताजनक दिखाई देती है। राजस्थान, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में युवा बेरोजगारी दर कई बार 20 से 25 प्रतिशत के आसपास तक दर्ज की गई है। यह अंतर बताता है कि क्षेत्रीय असमानताएं इस समस्या को और गहरा बना रही हैं।

बेरोजगारी को अक्सर केवल नौकरियों की कमी के रूप में देखा जाता है, लेकिन वास्तव में यह एक बहुआयामी समस्या है। इसमें शिक्षा व्यवस्था की खामियां, कौशल और उद्योग की जरूरतों के बीच असंतुलन, भर्ती प्रक्रियाओं में पारदर्शिता की कमी और सामाजिक–आर्थिक विषमताएँ शामिल हैं। देश में हर साल लाखों युवा डिग्री लेकर निकलते हैं, लेकिन उनमें से एक बड़ा हिस्सा रोजगार के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल से वंचित होता है। विभिन्न रिपोर्ट्स के अनुसार, भारत में केवल 40 से 50 प्रतिशत स्नातक ही 'रोजगार योग्य' माने जाते हैं। यह स्थिति बताती है कि भारत की शिक्षा प्रणाली अभी भी रोजगार के अनुरूप खुद को ढालने में पीछे है।

इसके साथ ही, बेरोजगारी का एक बड़ा कारण अवसरों का असमान वितरण भी है। शहरी क्षेत्रों में भी रोजगार के अवसर सीमित और प्रतिस्पर्धा अत्यधिक है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण है। छोटे शहरों और बस्तियों में रहने वाले युवाओं के पास न तो पर्याप्त संसाधन होते हैं और न ही मार्गदर्शन, जिसके कारण वे मुख्यधारा की प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए महंगी कोचिंग, उच्च शिक्षा और नेटवर्किंग के अवसर लगभग पहुंच से बाहर होते हैं, जिससे उनकी प्रतिभा दबकर रह जाती है। हालांकि, इस संकट के बीच एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति स्वरोजगार और कौशल आधारित कार्यों की ओर झुकाव के रूप में उभर रही है। जब औपचारिक रोजगार के अवसर सीमित होते हैं, तब लोग अपने स्तर पर छोटे व्यवसाय, हस्तशिल्प, सेवा कार्य और घरेलू उद्योगों के माध्यम से आजीविका के रास्ते तलाशते हैं। यह प्रवृत्ति न केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है, बल्कि स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन का माध्यम भी बन सकती है। इसके बावजूद, स्वरोजगार को अभी भी पर्याप्त संस्थागत समर्थन नहीं मिल पा रहा है।

बेरोजगारी जैसी जटिल समस्या का हल किसी एक उपाय से संभव नहीं है। इसके लिए समग्र और दीर्घकालिक रणनीति की आवश्यकता है। सबसे पहले, शिक्षा प्रणाली को रोजगारोन्मुख बनाना होगा, जिसमें व्यावसायिक और तकनीकी कौशल को प्राथमिकता दी जाए। साथ ही, स्थानीय स्तर पर कौशल विकास केंद्रों को मजबूत करना होगा, ताकि युवाओं को उनकी जरूरत और बाजार की मांग के अनुसार प्रशिक्षण मिल सके।

महिलाओं की स्थिति इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत में महिला श्रम भागीदारी दर अभी भी लगभग 25 से 30 प्रतिशत के बीच है, जो वैश्विक औसत से काफी कम है। सामाजिक बंधन, सुरक्षा की चिंता और घरेलू जिम्मेदारियाँ महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को सीमित करती हैं। यदि उन्हें कौशल प्रशिक्षण, सुरक्षित कार्य वातावरण और लचीले रोजगार के अवसर मिलें, तो वे न केवल अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकती हैं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत कर सकती हैं।

इस परिस्थिति में एक सकारात्मक पहलू यह भी है कि देश में कौशल और मेहनत के आधार पर आगे बढ़ने की संभावनाएं अब भी मौजूद हैं। अनौपचारिक क्षेत्र, जो भारत की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा है, आज भी करोड़ों लोगों को रोजगार देता है। निर्माण कार्य, छोटे उद्योग, सेवा क्षेत्र और घरेलू व्यवसाय जैसे क्षेत्रों में काम करने वाले लोग यह साबित करते हैं कि यदि कौशल और अवसर का सही मेल हो, तो सीमित संसाधनों के बावजूद भी आजीविका के रास्ते बनाए जा सकते हैं।

दरअसल बेरोजगारी जैसी जटिल समस्या का हल किसी एक उपाय से संभव नहीं है। इसके लिए समग्र और दीर्घकालिक रणनीति की आवश्यकता है। सबसे पहले, शिक्षा प्रणाली को रोजगारोन्मुख बनाना होगा, जिसमें व्यावसायिक और तकनीकी कौशल को प्राथमिकता दी जाए। साथ ही, स्थानीय स्तर पर कौशल विकास केंद्रों को मजबूत करना होगा, ताकि युवाओं को उनकी जरूरत और बाजार की मांग के अनुसार प्रशिक्षण मिल सके।

स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए आसान ऋण, तकनीकी सहायता और बाजार तक पहुंच सुनिश्चित करनी होगी, जिससे छोटे उद्यमी भी टिकाऊ व्यवसाय खड़ा कर सकें। महिलाओं के लिए विशेष नीतियां और सुविधाएं विकसित करनी होंगी, जिससे उनकी भागीदारी बढ़ सके। इसके अलावा, युवाओं को करियर मार्गदर्शन और मानसिक समर्थन देना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, ताकि वे सही दिशा में अपने प्रयासों को केंद्रित कर सकें।

वास्तव में, बेरोजगारी केवल आर्थिक चुनौती नहीं, बल्कि एक सामाजिक और नैतिक प्रश्न भी है। यदि देश की युवा शक्ति को सही दिशा और अवसर नहीं मिला, तो हम विकास के एक मजबूत स्तंभ को खो देंगे। इसलिए समय की मांग है कि नीति–निर्माता, समाज और संस्थाएं मिलकर एक ऐसी व्यवस्था तैयार करें, जहाँ रोजगार केवल एक अवसर न होकर हर व्यक्ति का अधिकार बन सके। तभी भारत अपनी युवा शक्ति को वास्तविक विकास की ताकत में बदल पाएगा।

मतदाताओं के नाम कटने का नफा- नुकसान

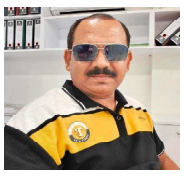

–मजहर हुसैन–

इस बार तृणमूल कांग्रेस को सत्ता से हटाने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने ममता बनर्जी का ही फार्मूला अपनाया है , इसके तहत राज्य सरकार की लक्ष्मी भंडार और युवा साथी जैसी योजनाओ की नकल करते हुए भाजपा ने कम से कम चार ऐसी योजनाओ को शुरू करने वादा किया है जिनके तहत लाभार्थियों के बैंक खाते में हर महीने पैसे भेजे जायेंगे ।

दिलचस्प बात ये है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी किसी दौर में विपक्षी डालो की ऐसी योजनाओ की तुलना 'रेवड़िया बांटने' से करते रहे है लेकिन अब भारतीय जनता पार्टी भी उसी राह पर बढ़ रही है ।

राजनितिक विश्लेषको की अगर माने तो बंगाल में अब पारम्परिक मुद्दे मतदाताओं को प्रभावित नहीं कर पा रहे है स रोजमर्रा के जीवन में महंगाई ,रसोई गैस की किल्लत और ैप्ट के दौरान काटे गए नाम ही उनके लिए अब ज्यादह अहम् हो गए है ।

इस बार चुनाव में ईरान – इजराइल युद्ध का भी खासा असर दिख रहा है । पांच साल पहले 2021 के विधान सभा चुनाव ने राष्ट्रीय स्तर पर जितनी सुर्खिया बटोरी थी इस बार वैसी चर्चा नहीं हो रही है ।

फिलहाल मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण 'एसआईआर' के दौरान कटे हुए नाम ही राज्यों का सबसे बड़ा चुनावी मुद्दा बन गया है , बंगाल के मतदाता को हमेशा से राजनितिक रूप से काफी जागरूक माना जाता है । घुसपैठ ,भ्रष्टाचार, और कानून व्यवस्था के अलावा भाजपा के पास कोई दूसरा मुद्दा नहीं है जिसके कारण मतदाताओं में उत्साह नहीं दिख रहा है । ऐसे हजारो मामले है जहा एक ही परिवार के केवल एक व्यक्ति का नाम है और तीन का नाम काट दिया गया है , मतदाता नाम काटने से हताश नजर आ रहे है जिसका नुक्सान भाजपा को उठाना पद सकता है ।

चौराहो से लेकर नुक्कड़ तक चाय की दुकानों पर कई महीने पहले से ही चुनाव को लेकर बहस छिड़ जाती थी लेकिन इस बार तस्वीर काफी अलग है स शहर से लेकर गांव तक मतदाताओं की प्रतिक्रिया बहुत सिमित हो कर रह गयी है , लोग खुल कर अपनी राय व्यक्त करने से बच रहे है यही वजह है की राजनैतिक दाल इस छुपाई को समझ नहीं पा रहे है की इस बार ऊँट किस करवट बैठेगा ।

ममता बनर्जी भी अच्छी तरह से जानती है की उनकी पार्टी खासकर उत्तर बंगाल में काफी कमजोर है स यही वजह है कि उन्होंने अपने चुनाव अभियान की शुरुआत उत्तर बंगाल से किया है स वह अब तक एक दर्जन से अधिक रैलियों को उत्तर बंगाल में सम्बोधित कर चुकी है ।

तृणमूल सूत्रों पर अगर यकीन करे तो इस बार वोटरों में भाजपा और केंद्र सरकार के प्रति भरी नाराजगी है इसलिए वह खामोश है और इस चुनाव में तृणमूल कांग्रेस को पहले से अधिक सीटों पर विजय हासिल होगी ।

उत्तर बंगाल के मतदाताओं को रिझाने के लिए पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी चाय बागान क्षेत्र में जहा रैलियों को सम्बोधित किया वही मतदाताओं को अपनी ओर करने के लिए रात गुजारी और लम्बा रोड शो किया लेकिन मतदाता की खामोशी लाख कोशिश के बाद भी टूटने का नाम नहीं ले रही है । वैसे उत्तर बंगाल को भाजपा का गढ़ माना जाता है लेकिन लेकिन इस बार असम से सटे कुछ इलाको में भारी गुटबाजी के कारण उसकी स्थिति काफी कंजोर हुयी है ।

चुनाव से पहले हर पार्टी बढ़ चढ़कर लुभावने वादे तो करती है लेकिन चुनाव के बाद सब भूल जाते है । यही वजह है की राज्य के लोग इस बार चुनावी वादों को गंभीरता से नहीं ले रहे है । अब देखना है की आखिर एक सप्ताह में मतदाता अपनी चुप्पी को तोड़ते है या चुपचाप मतदान कर देते है ।

कार्यालय ग्राम पंचायत भुवर सराय वि.खं. बस्ती सदर, जिला-बस्ती

अल्पकालिक निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत **भुवर सराय** द्वारा पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त केन्द्रीय वित्त/मनरेगा/वीबी–जीरामजी/राष्ट्रीयग्राम स्वराज/अभियान/स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण/एस०एल०डब्लू०एम०/सांसद निधि/विधायक निधि / अन्त्येष्टि स्थल का विकास/ मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना सहित अन्य योजनान्तर्गत योजना वर्ष 2026–27 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यों हेतु ईट, ईट गिट्टी, सीमेंट, लोकल सैड, बालू, मोरंग, मिट्टी दुलाई सहित, पत्थर गिट्टी, इण्टरलाकिंग ईट 80 एम०एम०, सरिया, ऐंगिल, फेंसिंग जाली, जी०आई० शीट, हयूम पाइप 250 एम०एम० व्यास से 900 एम०एम० व्यास तक सभी साइज, बेंच, डस्टबिन, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, विद्युत व इलेक्ट्रानिक उपकरण, इण्डिया मार्का हैण्डपम्प मम्मत व रिबोर से जुडे सामग्री व उपकरण, पेंटिंग, पलम्बिंग सामग्री, फागिंग मशीन व रसायन, सफाई उपकरण, कुर्सी, मेज, अलमारी, स्टेशनरी, साइनबोर्ड, शिलापट्ट, ठेला, ई रिक्शा आदि के आपूर्ति हेतु निविदा दर तथा वांछित एक प्रपत्र बन्द लिफाफे में कार्यालय ग्राम पंचायत **भुवर सराय** के निविदा बाक्स में दिनांक 25–04–2026 तक अपरान्ह 02:00 बजे तक डाली जायेगी। निविदा उसी दिन अपरान्ह 04:00 बजे आपूर्तिकर्ता या उसके प्रतिनिधि के उपस्थिति में कार्यालय ग्राम पंचायत में खोली जायेगी तथा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण की जायेगी। धरोहरं धनराशि मु० 5000–00 (पांच हजार) होगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 18–04–2026 से दिनांक 24–04–2026 तक कार्यालय दिवस में प्राप्त किया जा सकता है।

1– जिस आपूर्तिकर्ता का दर सबसे कम होगा उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2– आपूर्तिकर्ता का जी०एस०टी० का रजिस्ट्रेशन तथा आयकर देने का प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है।
3– कार्यालय ग्राम पंचायत **भुवर सराय** द्वारा नामित कर्मचारियों तथा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में निविदा निर्धारित तिथि, समय व स्थान पर खोला जायेगा।
4– सामग्री / उपकरण की आपूर्ति ग्राम पंचायत **भुवर सराय** की परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्य स्थल पर करनी होगी अलग से कोई ढुलाई व्यय देय नही होगी।
5– जो दरें प्रस्तुत की जाय जी०एस०टी० तथा कार्टेज एवं अन्य कर जोडकर प्रस्तुत की जाय।
6– सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत के आदेश पर की जायेगी।
7– सामग्री / उपकरण की मात्रा तथा समय आवश्यकतानुसार घटाई व बढ़ाई जा सकती है।
8– प्रस्तुत दरें पी०डब्लू०डी० द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नही होगा।
9– आपूर्तिकर्ता के बिल से नियमानुसार आयकर तथा जी०एस०टी० काटी जायेगी।
10– धरोहर की धनराशि नकद अथवा राष्ट्रीयकृत बैंक के एफ०डी०आर० पत्र/एन०एस०सी०/डाक घर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत **भुवर सराय** के नाम बन्धक हो संलग्न करना अनिवार्य है।
11– आपूर्ति दर स्वीकृत होने के बाद ग्राम पंचायत के आपूर्ति आदेश से सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति करना अनिवार्य होगा।
12– ग्राम प्रधान / सचिव/पंचायत सहायक/रोजगार सेवक / तकनीकी सहायक/कन्सल्टिंग इन्जीनियर तथा उनके सगे संबंधी रिश्तेदार द्वारा निविदा प्रस्तुत नहीं की जायेगी।
13– आपूर्तिकर्ता को भुगतान अवर अभियन्ता आर०ई०डी०/अवर अभियन्ता / कन्सल्टिंग अभियन्ता के द्वारा गुणवत्ता एवं मात्रा प्रमाणित होने एवं मापन के बाद ही होगा।
14– निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 50 रू0 है पर ही स्वीकृत की जायेगी।
15– सामग्री / उपकरण आपूर्ति के सम्बन्ध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्य दिवस को ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
16– निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास होगा।

(उमापति)	(आनन्द कुमार सिंह)
प्रधान	सचिव
ग्राम पंचायत–**भुवर सराय**	ग्राम पंचायत–**भुवर सराय**

पत्रांक/ मेमो/टेण्डर विज्ञप्ति 2026/27 दिनांक 15.04.2026

कार्यालय ग्राम पंचायत बसहवा वि.खं. बस्ती सदर, जिला-बस्ती

अल्पकालिक निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत **बसहवा** द्वारा पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त केन्द्रीय वित्त/मनरेगा/वीबी–जीरामजी/राष्ट्रीयग्राम स्वराज/अभियान/स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण/एस०एल०डब्लू०एम०/सांसद निधि/विधायक निधि / अन्त्येष्टि स्थल का विकास/ मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना सहित अन्य योजनान्तर्गत योजना वर्ष 2026–27 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यों हेतु ईट, ईट गिट्टी, सीमेंट, लोकल सैड, बालू, मोरंग, मिट्टी दुलाई सहित, पत्थर गिट्टी, इण्टरलाकिंग ईट 80 एम०एम०, सरिया, ऐंगिल, फेंसिंग जाली, जी०आई० शीट, हयूम पाइप 250 एम०एम० व्यास से 900 एम०एम० व्यास तक सभी साइज, बेंच, डस्टबिन, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, विद्युत व इलेक्ट्रानिक उपकरण, इण्डिया मार्का हैण्डपम्प मम्मत व रिबोर से जुडे सामग्री व उपकरण, पेंटिंग, पलम्बिंग सामग्री, फागिंग मशीन व रसायन, सफाई उपकरण, कुर्सी, मेज, अलमारी, स्टेशनरी, साइनबोर्ड, शिलापट्ट, ठेला, ई रिक्शा आदि के आपूर्ति हेतु निविदा दर तथा वांछित एक प्रपत्र बन्द लिफाफे में कार्यालय ग्राम पंचायत **बसहवा** के निविदा बाक्स में दिनांक 30–04–2026 तक अपरान्ह 02:00 बजे तक डाली जायेगी। निविदा उसी दिन अपरान्ह 04:00 बजे आपूर्तिकर्ता या उसके प्रतिनिधि के उपस्थिति में कार्यालय ग्राम पंचायत में खोली जायेगी तथा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण की जायेगी। धरोहरं धनराशि मु० 5000–00 (पांच हजार) होगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 18–04–2026 से दिनांक 24–04–2026 तक कार्यालय दिवस में प्राप्त किया जा सकता है।

1– जिस आपूर्तिकर्ता का दर सबसे कम होगा उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2– आपूर्तिकर्ता का जी०एस०टी० का रजिस्ट्रेशन तथा आयकर देने का प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है।
3– कार्यालय ग्राम पंचायत **बसहवा** द्वारा नामित कर्मचारियों तथा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में निविदा निर्धारित तिथि, समय व स्थान पर खोला जायेगा।
4– सामग्री / उपकरण की आपूर्ति ग्राम पंचायत **बसहवा** की परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्य स्थल पर करनी होगी अलग से कोई ढुलाई व्यय देय नही होगी।
5– जो दरें प्रस्तुत की जाय जी०एस०टी० तथा कार्टेज एवं अन्य कर जोडकर प्रस्तुत की जाय।
6– सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत के आदेश पर की जायेगी।
7– सामग्री / उपकरण की मात्रा तथा समय आवश्यकतानुसार घटाई व बढ़ाई जा सकती है।
8– प्रस्तुत दरें पी०डब्लू०डी० द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नही होगा।
9– आपूर्तिकर्ता के बिल से नियमानुसार आयकर तथा जी०एस०टी० काटी जायेगी।
10– धरोहर की धनराशि नकद अथवा राष्ट्रीयकृत बैंक के एफ०डी०आर० पत्र/एन०एस०सी०/डाक घर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत **बसहवा** के नाम बन्धक हो संलग्न करना अनिवार्य है।
11– आपूर्ति दर स्वीकृत होने के बाद ग्राम पंचायत के आपूर्ति आदेश से सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति करना अनिवार्य होगा।
12– ग्राम प्रधान / सचिव/पंचायत सहायक/रोजगार सेवक / तकनीकी सहायक/कन्सल्टिंग इन्जीनियर तथा उनके सगे संबंधी रिश्तेदार द्वारा निविदा प्रस्तुत नहीं की जायेगी।
13– आपूर्तिकर्ता को भुगतान अवर अभियन्ता आर०ई०डी०/अवर अभियन्ता / कन्सल्टिंग अभियन्ता के द्वारा गुणवत्ता एवं मात्रा प्रमाणित होने एवं मापन के बाद ही होगा।
14– निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 50 रू0 है पर ही स्वीकृत की जायेगी।
15– सामग्री / उपकरण आपूर्ति के सम्बन्ध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्य दिवस को ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
16– निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास होगा।

(अजय कुमार)	(आनन्द कुमार सिंह)
प्रधान	सचिव
ग्राम पंचायत–**बसहवा**	ग्राम पंचायत–**बसहवा**

पत्रांक/ मेमो/टेण्डर विज्ञप्ति 2026/27 दिनांक 15.04.2026

कार्यालय ग्राम पंचायत महरीपुर वि.खं. बस्ती सदर, जिला-बस्ती

अल्पकालिक निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत **महरीपुर** द्वारा पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त केन्द्रीय वित्त/मनरेगा/वीबी–जीरामजी/राष्ट्रीयग्राम स्वराज/अभियान/स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण/एस०एल०डब्लू०एम०/सांसद निधि/विधायक निधि / अन्त्येष्टि स्थल का विकास/ मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना सहित अन्य योजनान्तर्गत योजना वर्ष 2026–27 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यों हेतु ईट, ईट गिट्टी, सीमेंट, लोकल सैड, बालू, मोरंग, मिट्टी दुलाई सहित, पत्थर गिट्टी, इण्टरलाकिंग ईट 80 एम०एम०, सरिया, ऐंगिल, फेंसिंग जाली, जी०आई० शीट, हयूम पाइप 250 एम०एम० व्यास से 900 एम०एम० व्यास तक सभी साइज, बेंच, डस्टबिन, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, विद्युत व इलेक्ट्रानिक उपकरण, इण्डिया मार्का हैण्डपम्प मम्मत व रिबोर से जुडे सामग्री व उपकरण, पेंटिंग, पलम्बिंग सामग्री, फागिंग मशीन व रसायन, सफाई उपकरण, कुर्सी, मेज, अलमारी, स्टेशनरी, साइनबोर्ड, शिलापट्ट, ठेला, ई रिक्शा आदि के आपूर्ति हेतु निविदा दर तथा वांछित एक प्रपत्र बन्द लिफाफे में कार्यालय ग्राम पंचायत **महरीपुर** के निविदा बाक्स में दिनांक 28–04–2026 तक अपरान्ह 02:00 बजे तक डाली जायेगी। निविदा उसी दिन अपरान्ह 04:00 बजे आपूर्तिकर्ता या उसके प्रतिनिधि के उपस्थिति में कार्यालय ग्राम पंचायत में खोली जायेगी तथा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण की जायेगी। धरोहरं धनराशि मु० 5000–00 (पांच हजार) होगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 18–04–2026 से दिनांक 24–04–2026 तक कार्यालय दिवस में प्राप्त किया जा सकता है।

1– जिस आपूर्तिकर्ता का दर सबसे कम होगा उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2– आपूर्तिकर्ता का जी०एस०टी० का रजिस्ट्रेशन तथा आयकर देने का प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है।
3– कार्यालय ग्राम पंचायत **महरीपुर** द्वारा नामित कर्मचारियों तथा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में निविदा निर्धारित तिथि, समय व स्थान पर खोला जायेगा।
4– सामग्री / उपकरण की आपूर्ति ग्राम पंचायत **महरीपुर** की परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्य स्थल पर करनी होगी अलग से कोई ढुलाई व्यय देय नही होगी।
5– जो दरें प्रस्तुत की जाय जी०एस०टी० तथा कार्टेज एवं अन्य कर जोडकर प्रस्तुत की जाय।
6– सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत के आदेश पर की जायेगी।
7– सामग्री / उपकरण की मात्रा तथा समय आवश्यकतानुसार घटाई व बढ़ाई जा सकती है।
8– प्रस्तुत दरें पी०डब्लू०डी० द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नही होगा।
9– आपूर्तिकर्ता के बिल से नियमानुसार आयकर तथा जी०एस०टी० काटी जायेगी।
10– धरोहर की धनराशि नकद अथवा राष्ट्रीयकृत बैंक के एफ०डी०आर० पत्र/एन०एस०सी०/डाक घर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत **महरीपुर** के नाम बन्धक हो संलग्न करना अनिवार्य है।
11– आपूर्ति दर स्वीकृत होने के बाद ग्राम पंचायत के आपूर्ति आदेश से सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति करना अनिवार्य होगा।
12– ग्राम प्रधान / सचिव/पंचायत सहायक/रोजगार सेवक / तकनीकी सहायक/कन्सल्टिंग इन्जीनियर तथा उनके सगे संबंधी रिश्तेदार द्वारा निविदा प्रस्तुत नहीं की जायेगी।
13– आपूर्तिकर्ता को भुगतान अवर अभियन्ता आर०ई०डी०/अवर अभियन्ता / कन्सल्टिंग अभियन्ता के द्वारा गुणवत्ता एवं मात्रा प्रमाणित होने एवं मापन के बाद ही होगा।
14– निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 50 रू0 है पर ही स्वीकृत की जायेगी।
15– सामग्री / उपकरण आपूर्ति के सम्बन्ध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्य दिवस को ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
16– निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास होगा।

(सुनीता यादव)	(आनन्द कुमार सिंह)
प्रधान	सचिव
ग्राम पंचायत–**महरीपुर**	ग्राम पंचायत–**महरीपुर**

पत्रांक/ मेमो/टेण्डर विज्ञप्ति 2026/27 दिनांक 15.04.2026

कार्यालय ग्राम पंचायत कुसमौर वि.खं. बस्ती सदर, जिला-बस्ती

अल्पकालिक निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत **कुसमौर** द्वारा पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त केन्द्रीय वित्त/मनरेगा/वीबी–जीरामजी/राष्ट्रीयग्राम स्वराज/अभियान/स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण/एस०एल०डब्लू०एम०/सांसद निधि/विधायक निधि / अन्त्येष्टि स्थल का विकास/ मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना सहित अन्य योजनान्तर्गत योजना वर्ष 2026–27 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यों हेतु ईट, ईट गिट्टी, सीमेंट, लोकल सैड, बालू, मोरंग, मिट्टी दुलाई सहित, पत्थर गिट्टी, इण्टरलाकिंग ईट 80 एम०एम०, सरिया, ऐंगिल, फेंसिंग जाली, जी०आई० शीट, हयूम पाइप 250 एम०एम० व्यास से 900 एम०एम० व्यास तक सभी साइज, बेंच, डस्टबिन, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, विद्युत व इलेक्ट्रानिक उपकरण, इण्डिया मार्का हैण्डपम्प मम्मत व रिबोर से जुडे सामग्री व उपकरण, पेंटिंग, पलम्बिंग सामग्री, फागिंग मशीन व रसायन, सफाई उपकरण, कुर्सी, मेज, अलमारी, स्टेशनरी, साइनबोर्ड, शिलापट्ट, ठेला, ई रिक्शा आदि के आपूर्ति हेतु निविदा दर तथा वांछित एक प्रपत्र बन्द लिफाफे में कार्यालय ग्राम पंचायत **कुसमौर** के निविदा बाक्स में दिनांक 25–04–2026 तक अपरान्ह 10:00 बजे तक डाली जायेगी। निविदा उसी दिन अपरान्ह 12:00 बजे आपूर्तिकर्ता या उसके प्रतिनिधि के उपस्थिति में कार्यालय ग्राम पंचायत में खोली जायेगी तथा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण की जायेगी। धरोहरं धनराशि मु० 5000–00 (पांच हजार) होगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 18–04–2026 से दिनांक 24–04–2026 तक कार्यालय दिवस में प्राप्त किया जा सकता है।

1– जिस आपूर्तिकर्ता का दर सबसे कम होगा उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2– आपूर्तिकर्ता का जी०एस०टी० का रजिस्ट्रेशन तथा आयकर देने का प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है।
3– कार्यालय ग्राम पंचायत **कुसमौर** द्वारा नामित कर्मचारियों तथा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में निविदा निर्धारित तिथि, समय व स्थान पर खोला जायेगा।
4– सामग्री / उपकरण की आपूर्ति ग्राम पंचायत **कुसमौर** की परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्य स्थल पर करनी होगी अलग से कोई ढुलाई व्यय देय नही होगी।
5– जो दरें प्रस्तुत की जाय जी०एस०टी० तथा कार्टेज एवं अन्य कर जोडकर प्रस्तुत की जाय।
6– सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत के आदेश पर की जायेगी।
7– सामग्री / उपकरण की मात्रा तथा समय आवश्यकतानुसार घटाई व बढ़ाई जा सकती है।
8– प्रस्तुत दरें पी०डब्लू०डी० द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नही होगा।
9– आपूर्तिकर्ता के बिल से नियमानुसार आयकर तथा जी०एस०टी० काटी जायेगी।
10– धरोहर की धनराशि नकद अथवा राष्ट्रीयकृत बैंक के एफ०डी०आर० पत्र/एन०एस०सी०/डाक घर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत **कुसमौर** के नाम बन्धक हो संलग्न करना अनिवार्य है।
11– आपूर्ति दर स्वीकृत होने के बाद ग्राम पंचायत के आपूर्ति आदेश से सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति करना अनिवार्य होगा।
12– ग्राम प्रधान / सचिव/पंचायत सहायक/रोजगार सेवक / तकनीकी सहायक/कन्सल्टिंग इन्जीनियर तथा उनके सगे संबंधी रिश्तेदार द्वारा निविदा प्रस्तुत नहीं की जायेगी।
13– आपूर्तिकर्ता को भुगतान अवर अभियन्ता आर०ई०डी०/अवर अभियन्ता / कन्सल्टिंग अभियन्ता के द्वारा गुणवत्ता एवं मात्रा प्रमाणित होने एवं मापन के बाद ही होगा।
14– निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 50 रू0 है पर ही स्वीकृत की जायेगी।
15– सामग्री / उपकरण आपूर्ति के सम्बन्ध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्य दिवस को ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
16– निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास होगा।

(पवन कुमार यादव)	(आनन्द कुमार सिंह)
प्रधान	सचिव
ग्राम पंचायत–**कुसमौर**	ग्राम पंचायत–**कुसमौर**

पत्रांक/ मेमो/टेण्डर विज्ञप्ति 2026/27 दिनांक 15.04.2026

कार्यालय ग्राम पंचायत भौसिंहपुर वि.खं. बस्ती सदर, जिला-बस्ती

अल्पकालिक निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत **भौसिंहपुर** द्वारा पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त केन्द्रीय वित्त/मनरेगा/वीबी–जीरामजी/राष्ट्रीयग्राम स्वराज/अभियान/स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण/एस०एल०डब्लू०एम०/सांसद निधि/विधायक निधि / अन्त्येष्टि स्थल का विकास/ मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना सहित अन्य योजनान्तर्गत योजना वर्ष 2026–27 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यों हेतु ईट, ईट गिट्टी, सीमेंट, लोकल सैड, बालू, मोरंग, मिट्टी दुलाई सहित, पत्थर गिट्टी, इण्टरलाकिंग ईट 80 एम०एम०, सरिया, ऐंगिल, फेंसिंग जाली, जी०आई० शीट, हयूम पाइप 250 एम०एम० व्यास से 900 एम०एम० व्यास तक सभी साइज, बेंच, डस्टबिन, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, विद्युत व इलेक्ट्रानिक उपकरण, इण्डिया मार्का हैण्डपम्प मम्मत व रिबोर से जुडे सामग्री व उपकरण, पेंटिंग, पलम्बिंग सामग्री, फागिंग मशीन व रसायन, सफाई उपकरण, कुर्सी, मेज, अलमारी, स्टेशनरी, साइनबोर्ड, शिलापट्ट, ठेला, ई रिक्शा आदि के आपूर्ति हेतु निविदा दर तथा वांछित एक प्रपत्र बन्द लिफाफे में कार्यालय ग्राम पंचायत **भौसिंहपुर** के निविदा बाक्स में दिनांक 27–04–2026 तक अपरान्ह 10:00 बजे तक डाली जायेगी। निविदा उसी दिन अपरान्ह 12:00 बजे आपूर्तिकर्ता या उसके प्रतिनिधि के उपस्थिति में कार्यालय ग्राम पंचायत में खोली जायेगी तथा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण की जायेगी। धरोहरं धनराशि मु० 5000–00 (पांच हजार) होगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 18–04–2026 से दिनांक 24–04–2026 तक कार्यालय दिवस में प्राप्त किया जा सकता है।

1– जिस आपूर्तिकर्ता का दर सबसे कम होगा उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2– आपूर्तिकर्ता का जी०एस०टी० का रजिस्ट्रेशन तथा आयकर देने का प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है।
3– कार्यालय ग्राम पंचायत **भौसिंहपुर** द्वारा नामित कर्मचारियों तथा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में निविदा निर्धारित तिथि, समय व स्थान पर खोला जायेगा।
4– सामग्री / उपकरण की आपूर्ति ग्राम पंचायत **भौसिंहपुर** की परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्य स्थल पर करनी होगी अलग से कोई ढुलाई व्यय देय नही होगी।
5– जो दरें प्रस्तुत की जाय जी०एस०टी० तथा कार्टेज एवं अन्य कर जोडकर प्रस्तुत की जाय।
6– सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत के आदेश पर की जायेगी।
7– सामग्री / उपकरण की मात्रा तथा समय आवश्यकतानुसार घटाई व बढ़ाई जा सकती है।
8– प्रस्तुत दरें पी०डब्लू०डी० द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नही होगा।
9– आपूर्तिकर्ता के बिल से नियमानुसार आयकर तथा जी०एस०टी० काटी जायेगी।
10– धरोहर की धनराशि नकद अथवा राष्ट्रीयकृत बैंक के एफ०डी०आर० पत्र/एन०एस०सी०/डाक घर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत **भौसिंहपुर** के नाम बन्धक हो संलग्न करना अनिवार्य है।
11– आपूर्ति दर स्वीकृत होने के बाद ग्राम पंचायत के आपूर्ति आदेश से सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति करना अनिवार्य होगा।
12– ग्राम प्रधान / सचिव/पंचायत सहायक/रोजगार सेवक / तकनीकी सहायक/कन्सल्टिंग इन्जीनियर तथा उनके सगे संबंधी रिश्तेदार द्वारा निविदा प्रस्तुत नहीं की जायेगी।
13– आपूर्तिकर्ता को भुगतान अवर अभियन्ता आर०ई०डी०/अवर अभियन्ता / कन्सल्टिंग अभियन्ता के द्वारा गुणवत्ता एवं मात्रा प्रमाणित होने एवं मापन के बाद ही होगा।
14– निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 50 रू0 है पर ही स्वीकृत की जायेगी।
15– सामग्री / उपकरण आपूर्ति के सम्बन्ध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्य दिवस को ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
16– निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास होगा।

(प्रेमराज)	(आनन्द कुमार सिंह)
प्रधान	सचिव
ग्राम पंचायत–**भौसिंहपुर**	ग्राम पंचायत–**भौसिंहपुर**

पत्रांक/ मेमो/टेण्डर विज्ञप्ति 2026/27 दिनांक 15.04.2026

कार्यालय ग्राम पंचायत ओठगनपुर वि.खं. बस्ती सदर, जिला-बस्ती

अल्पकालिक निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत **ओठगनपुर** द्वारा पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त केन्द्रीय वित्त/मनरेगा/वीबी–जीरामजी/राष्ट्रीयग्राम स्वराज/अभियान/स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण/एस०एल०डब्लू०एम०/सांसद निधि/विधायक निधि / अन्त्येष्टि स्थल का विकास/ मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना सहित अन्य योजनान्तर्गत योजना वर्ष 2026–27 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यों हेतु ईट, ईट गिट्टी, सीमेंट, लोकल सैड, बालू, मोरंग, मिट्टी दुलाई सहित, पत्थर गिट्टी, इण्टरलाकिंग ईट 80 एम०एम०, सरिया, ऐंगिल, फेंसिंग जाली, जी०आई० शीट, हयूम पाइप 250 एम०एम० व्यास से 900 एम०एम० व्यास तक सभी साइज, बेंच, डस्टबिन, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, विद्युत व इलेक्ट्रानिक उपकरण, इण्डिया मार्का हैण्डपम्प मम्मत व रिबोर से जुडे सामग्री व उपकरण, पेंटिंग, पलम्बिंग सामग्री, फागिंग मशीन व रसायन, सफाई उपकरण, कुर्सी, मेज, अलमारी, स्टेशनरी, साइनबोर्ड, शिलापट्ट, ठेला, ई रिक्शा आदि के आपूर्ति हेतु निविदा दर तथा वांछित एक प्रपत्र बन्द लिफाफे में कार्यालय ग्राम पंचायत **ओठगनपुर** के निविदा बाक्स में दिनांक 27–04–2026 तक अपरान्ह 02:00 बजे तक डाली जायेगी। निविदा उसी दिन अपरान्ह 04:00 बजे आपूर्तिकर्ता या उसके प्रतिनिधि के उपस्थिति में कार्यालय ग्राम पंचायत में खोली जायेगी तथा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण की जायेगी। धरोहरं धनराशि मु० 5000–00 (पांच हजार) होगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 18–04–2026 से दिनांक 24–04–2026 तक कार्यालय दिवस में प्राप्त किया जा सकता है।

1– जिस आपूर्तिकर्ता का दर सबसे कम होगा उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2– आपूर्तिकर्ता का जी०एस०टी० का रजिस्ट्रेशन तथा आयकर देने का प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है।
3– कार्यालय ग्राम पंचायत **ओठगनपुर** द्वारा नामित कर्मचारियों तथा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में निविदा निर्धारित तिथि, समय व स्थान पर खोला जायेगा।
4– सामग्री / उपकरण की आपूर्ति ग्राम पंचायत **ओठगनपुर** की परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्य स्थल पर करनी होगी अलग से कोई ढुलाई व्यय देय नही होगी।
5– जो दरें प्रस्तुत की जाय जी०एस०टी० तथा कार्टेज एवं अन्य कर जोडकर प्रस्तुत की जाय।
6– सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत के आदेश पर की जायेगी।
7– सामग्री / उपकरण की मात्रा तथा समय आवश्यकतानुसार घटाई व बढ़ाई जा सकती है।
8– प्रस्तुत दरें पी०डब्लू०डी० द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नही होगा।
9– आपूर्तिकर्ता के बिल से नियमानुसार आयकर तथा जी०एस०टी० काटी जायेगी।
10– धरोहर की धनराशि नकद अथवा राष्ट्रीयकृत बैंक के एफ०डी०आर० पत्र/एन०एस०सी०/डाक घर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत **ओठगनपुर** के नाम बन्धक हो संलग्न करना अनिवार्य है।
11– आपूर्ति दर स्वीकृत होने के बाद ग्राम पंचायत के आपूर्ति आदेश से सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति करना अनिवार्य होगा।
12– ग्राम प्रधान / सचिव/पंचायत सहायक/रोजगार सेवक / तकनीकी सहायक/कन्सल्टिंग इन्जीनियर तथा उनके सगे संबंधी रिश्तेदार द्वारा निविदा प्रस्तुत नहीं की जायेगी।
13– आपूर्तिकर्ता को भुगतान अवर अभियन्ता आर०ई०डी०/अवर अभियन्ता / कन्सल्टिंग अभियन्ता के द्वारा गुणवत्ता एवं मात्रा प्रमाणित होने एवं मापन के बाद ही होगा।
14– निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 50 रू0 है पर ही स्वीकृत की जायेगी।
15– सामग्री / उपकरण आपूर्ति के सम्बन्ध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्य दिवस को ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
16– निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास होगा।

(जगदीश)	(आनन्द कुमार सिंह)
प्रधान	सचिव
ग्राम पंचायत–**ओठगनपुर**	ग्राम पंचायत–**ओठगनपुर**

पत्रांक/ मेमो/टेण्डर विज्ञप्ति 2026/27 दिनांक 15.04.2026

कंबल के बदले मोबाइल लेकर साइबर ठगी करने वाला गैंग बेनकाब, बिहार के पांच आरोपित गिरफ्तार

संवाददाता–महराजगंज। जनपद पुलिस ने साइबर अपराध के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए कंबल व बर्तन के बदले पुराने मोबाइल फोन जुटाकर साइबर ठगी करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने परतावल नहर पटरी से पांच शातिर आरोपितों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से भारी मात्रा में मोबाइल फोन, मदरबोर्ड, नकदी व बाइक बरामद हुई है। इन बरामद मोबाइल व मदर बोर्ड को आरोपित कोलकाता के एक व्यक्ति को देने वाले थे। जहां से इन मोबाइल को साइबर फ्रॉड के हॉट स्पॉट पर भेजने की योजना थी लेकिन पुलिस ने अपराधियों के मंसूबे को सफल नहीं होने दिया ।पुलिस कार्यालय के तथागत सभागार में बुधवार को एसपी शक्ति मोहन अवस्थी ने खुलासा किया। बताया कि साइबर क्राइम थाना प्रभारी निरीक्षक सजनू कुमार यादव और श्यामदेउरवां थानाध्यक्ष अभिषेक सिंह की टीम ने संयुक्त रूप से छापेमारी कर सफलता हासिल की ।ऐसे करते थे ठगी का इंतजामपूछताछ में आरोपितों ने बताया कि सरकार द्वारा साइबर अपराधियों द्वारा अपराध में प्रयुक्त फोन की आईएमईआई नंबर ब्लॉक किए जाने के कारण वे बार बार नई मोबाइल फोन नहीं खरीद पा रहे थे। इस वजह से वे नया तरीका अपनाया। गांव गांव घूम कर पुराने मोबाइल के बदले कम्बल या अन्य सामान देकर मोबाइल इकट्ठा करते थे। इसके बाद इन मोबाइलों को कोलकाता ले जाकर अपने साथी को बेच देते थे। वहां से ये फोन साइबर अपराधियों तक पहुंचते थे, जो इनके मदरबोर्ड में मौजूद आईएमईआई नंबर का इस्तेमाल कर ओटीपी फ्रॉड, फिशिंग व फर्जी कॉलिंग जैसी घटनाओं को अंजाम देते थे ।अस्सी लाख का मोबाइल फोन बरामदपुलिस ने आरोपियों के पास से अस्सी लाख रुपए मूल्य के 318 एंड्रॉयड मोबाइल फोन, 110 मोबाइल मदरबोर्ड, पांच मोबाइल फोन, 5700 रुपये नकद व पांच मोटरसाइकिल बरामद की हैं। एसपी शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि बरामद मोबाइलों के आईएमईआई का तकनीकी विश्लेषण कराया जा रहा है ।बिहार के रहने वाले हैं सभी आरोपीगिरफ्तार आरोपितों में विकेश कुमार, रमाकांत साहनी, बृजबिहारी, मुन्ना कुमार व रामदरश शामिल हैं। सभी बिहार के पूर्वी चंपारण व आसपास के क्षेत्रों के निवासी हैं। गिरोह के सक्रिय सदस्य बताए जा रहे हैं। आरोपितों ने बताया कि पांच अप्रैल से वे श्यामदेउरवा थाना क्षेत्र के परतावल में रह रहे थे। मुन्ना कुमार मास्टरमाइंड व मुखिया है। एसपी शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि पुलिस गिरोह के अन्य सदस्यों और वित्तीय लेन–देन की जांच में जुटी है। साइबर अपराधियों के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा। उन्होंने लोगों से अपील की कि पुराने मोबाइल फोन बेचते समय सावधानी बरतें और केवल अधिकृत या विश्वसनीय माध्यम से ही लेन–देन करें ।खुलासा करने वाली टीम में यह रहे शामिलखुलासा करने वाली टीम ने साइबर क्राइम थाना के प्रभारी निरीक्षक सजनू कुमार यादव, श्यामदेउरवा थानाध्यक्ष अभिषेक सिंह, चौकी इंचार्ज परतावल अमित कुमार सिंह, एसआई अक्षय कुमार सहित सिंह, साइबर थाना के एसआई अमित यादव, हेड कांस्टेबल प्रफुल्ल कुमार यादव, कांस्टेबल उमेश यादव, संतोष शर्मा, प्रमोद यादव आदि शामिल रहे।

पुलिस ने चोरी की बोलेरो, ट्रैक्टर और ट्रॉली किया बरामद, तीन आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता–गोंडा। जिले की नवाबगंज पुलिस ने एक अंतर्जनपदीय वाहन चोर गिरोह का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से चोरी की एक बोलेरो गाड़ी, एक ट्रैक्टर और एक ट्रॉली बरामद की है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की पहचान रामतेज यादव, अमन कुमार और फुरकान के रूप में हुई है। ये तीनों सीतापुर जिले के रेउसा थाना क्षेत्र से चोरी की गई बोलेरो गाड़ी को गोंडा के नवाबगंज कोल्ड स्टोर होते हुए अयोध्या ले जा रहे थे।

नवाबगंज कोल्ड स्टोर पर चेकिंग के दौरान पुलिस ने जब इन आरोपियों को रोकने का प्रयास किया, तो वे बोलेरो गाड़ी लेकर भागने लगे। पुलिस ने पीछा कर उन्हें पकड़ा, जिसके बाद पता चला कि बोलेरो बिना नंबर की थी और सीतापुर से चोरी हुई थी। पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि ट्रैक्टर को सीतापुर जिले के रामपुर मथुरा थानाक्षेत्र से चुराया गया था, जिसके संबंध में रेउसा थाने में मुकदमा दर्ज है। ट्रॉली भी सीतापुर से ही चुराई गई थी। आरोपी रामतेज यादव और फुरकान लखनऊ के निवासी हैं, जबकि अमन बाराबंकी जिले का रहने वाला है। आरोपी फुरकान के खिलाफ एक, रामतेज यादव के खिलाफ छह और अमन के खिलाफ उत्तर प्रदेश के विभिन्न थानों में चार मुकदमे दर्ज हैं। नवाबगंज थाना अध्यक्ष अभय सिंह ने बताया कि तीनों आरोपी चोरी की बोलेरो गाड़ी को अयोध्या ले जाकर बेचने की फिराक में थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें समय रहते गिरफ्तार कर लिया।

युवती की संदिग्ध हालात में मौत

संवाददाता–देवरिया। जिले के सिरौली थाना क्षेत्र के सिंगे गांव में बुधवार दोपहर एक 18 वर्षीय युवती की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतका की पहचान राम भगत चौहान की पुत्री खुशी चौहान (18) के रूप में हुई है। परिजनों के अनुसार, परिवार के सदस्यों ने उसे किसी बात पर डांटा था, जिसके बाद वह नाराज होकर अपने कमरे में चली गई थी।

बताया जा रहा है कि दोपहर करीब तीन बजे उसने कमरे में पंखे की कुंडी में दुपट्टे के सहारे फंदा लगा लिया। कुछ देर बाद जब उसकी मां कमरे में पहुंचीं, तो बेटी को फंदे से लटका देख उन्होंने शोर मचाया। आवाज सुनकर परिजन और आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और युवती को तत्काल नीचे उतारकर महर्षि देवरहा बाबा मेडिकल कॉलेज ले गए।

अस्पताल पहुंचने पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलने पर सदर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

इस संबंध में कोतवाल राकेश राय ने बताया कि युवती की मौत संदिग्ध परिस्थितियों में हुई है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है और रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस मामले की सभी पहलुओं से जांच कर रही है।

ग्राम पंचायत– महरिया विकास खण्ड उसका बाजाऱ
जनपद–सिद्धार्थनगर

अल्पकालीन निविदा सूचना

ग्राम पंचायत **महरिया** द्वारा मनरेगा/बीवीजी/रामजी / राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना / विकसित भारत गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन (ग्रामीण) / 15वां / 16वां वित्त /केन्द्रीय वित्त / पंचम राज्य वित्त आयोग /ओएसआर वित्त/उत्सव भवन / स्वच्छ भारत मिशन/एस.एल. डब्ल्यू. एम. / सांसद / विधायक एम. एल. सी. निधि के अन्तर्गत वर्ष 2026–2027 में स्वीकृत योजनाओं के अन्तर्गत कराये जाने वाले कार्यों में प्रयोग हेतु सामग्री आपूर्ति हेतु (प्रथम श्रेणी ईंट, सीमेंट, ईंट की गिट्टी, पत्थर की गिट्टी, सरिया, पेंट, साइनबोर्ड, ह्यूम पाइप, स्ट्रीट लाइट, सफाई सामग्री, बेला, सादा बालू, मोरंग बालू, कूड़ादान, प्लास्टिक बैंक, ई–रिक्शा साइकिल, ई–रिक्शा मरम्मत, स्वच्छता किट, इन्सिनरेटर आदि एवं अन्य प्रकार की निर्माण में प्रयुक्त सामग्री आदि) की आवश्यकता है। इस निमित्त निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक 23–04–2026 को समय 11:30 बजे तक अपनी निविदा फार्म मूल्य रू100.00 के स्टाम्प पेपर तथा वांछित प्रपत्र बंद लिफाफे में कार्यालय/स्थान ग्राम पंचायत **महरिया** निविदा बॉक्स में डालेंगे। निविदा उसी दिन 02:30 बजे निविदाताओं के समक्ष खोली जाएगी। शर्तें एवं नियमावली: 1. अधिकृत फर्म/अधिकृत डीलर का जी.एस.टी. रजिस्ट्रेशन अनिवार्य है तथा 03 वर्ष का आयकर क्लियरेंस संलग्न करना अनिवार्य है। 2. जी. एस. टी. तथा कार्टेज चार्ज जोड़कर ही दरें प्रस्तुत की जाएं। 3. आपूर्तिकर्ता को आपूर्ति पर 2.28 प्रतिशत आयकर/टीडीएस देना होगा। 4. प्रस्तुत दरें पी.डब्ल्यू.डी. द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नहीं होंगी। भुगतान पी.डब्ल्यू.डी. के समयानुसार तय दर पर ही किया जाएगा। 5. ग्राम पंचायत सचिव/ग्राम प्रधान, रोजगार सेवक, पंचायत सहायक, टीए, अवर अभियंता के सगे सम्बन्धी एवं रिश्तेदार द्वारा निविदा प्रस्तुत नहीं की जाएगी 16. धरोहर की धनराशि रू 5000.00 (पांच हजार) होगी। 7. धरोहर की राशि राष्ट्रीयकृत बैंकों के एफडीआर/एनएससी एवं डाकघर के बचत पत्र के रूप में सचिव ग्राम पंचायत के नाम बंधक होगी। मूल प्रति संलग्न करना अनिवार्य है। 8. निविदा स्वीकृत होने के उपरांत ग्राम प्रधान सचिव ग्राम पंचायत द्वारा आदेश देने पर ही सामग्री की आपूर्ति की जाएगी। 9. आदेश देने के सात दिनों के अंदर सामग्री आपूर्ति न करने की दशा में धरोहर की धनराशि जब्त कर ली जाएगी। 10. सामग्री की आपूर्ति स्वीकृत दर से निर्धारित कार्यस्थल पर करनी होगी। 11. सामग्री की मात्रा कार्य के अनुसार घटाई व बढ़ाई जा सकती है। 12. आपूर्ति कर्ता को भुगतान का इंजीनियर/अवर अभियंता (या अभियंता) /तकनीकी सहायक द्वारा सामग्री की गुणवत्ता प्रमाणित होने तथा माप के उपरांत किया जाएगा। गुणवत्ता में कमी पाए जाने पर भुगतान नहीं किया जाएगा। 13. निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र रू 100.00 में ही स्वीकार किया जाएगा। 14. निविदा फार्म किसी भी कार्य दिवस में ग्राम पंचायत कार्यालय से निर्धारित मूल्य देकर प्राप्त किया जा सकता है। 15. निविदा को बिना कारण बताए निरस्त करने का अधिकार ग्राम प्रधान/सचिव ग्राम पंचायत के पास सुरक्षित रहेगा। 16. निविदा के सम्बन्ध में अन्य जानकारी सचिव ग्राम पंचायत **महरिया** से किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त की जा सकती है। 17. जिस कार्य की निविदा पृथक से निकाली जाएगी उस कार्य पर इस निविदा की शर्तें लागू नहीं होंगी।

ग्राम प्रधान	सचिव
ओम प्रकाश सिंह	मनोज प्रभाकर पटेल
ग्राम पंचायत–महरिया	ग्राम पंचायत–महरिया
विकास खण्ड–उसका बाजाऱ	विकास खण्ड–उसका बाजाऱ,
सिद्धार्थनगर	सिद्धार्थनगर

दुकान के रेस्ट रूम में मिला युवती का शव, हत्या की आशंका

संवाददाता–गोरखपुर। कैंट थाना क्षेत्र के जिला पंचायत रोड स्थित एमपी बिल्डिंग की एक दुकान के रेस्ट रूम में युवती का शव मिलने से इलाके में हड़कंप मच गया। युवती की पहचान गंगोत्री यादव, निवासी कोट कमहरिया, थाना पुरंदरपुर, जिला महराजगंज के रूप में हुई है। दुर्गंधा उठने पर दुकानदारों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची। आगे की जांच कर रही है। सात वर्ष पहले गंगोत्री ने कोतवाली क्षेत्र के रहने वाले अनिल के साथ मिलकर दुकान खोली थी। गोरखनाथ थाना क्षेत्र में कौड़िया के पास किराए के मकान में अकेले रहते हुए दुकान चलाती थी। रविवार को वह मकान से दुकान के लिए निकली थी। इसके बाद से उसका पता नहीं चला। सोमवार को मोबाइल फोन बंद मिलने पर मंगलवार को गांव से बड़े भाई रमेश दुकान पर पहुंचे तो दुकान का शटर गिरा मिला। बहन को ढूढ़ते हुए वह किराए के मकान पर पहुंचे तो वहा भी गंगोत्री का पता नहीं चला। मकान पर लगे सीसी कैमरे के फुटेज में वह रविवार की सुबह जाते हुए दिखी। इसी बीच बुधवार की सुबह दुकान से दुर्गंध आने पर आसपास के दुकानदारों ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची कैंट पुलिस ने जब शटर उठाया तो रेस्ट रूम में गंगोत्री का शव जमीन पर पड़ा मिला। जानकारी होने पर गांव से युवती पिता समेत अन्य भी घटना स्थल पर पहुंचे। स्वजन ने हत्या का आरोप लगाया है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस के अनुसार, युवती का शव पूरी तरह से सड़ गया था, जिससे हत्या या आत्महत्या के कारण स्पष्ट नहीं हो सके हैं। प्रभारी निरीक्षक संजय सिंह ने कहा कि सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए जांच की जा रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही मौत की पुष्टि होगी। जल्द ही घटना का पर्दाफाश किया जाएगा। कुछ लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है।

राजगुरुसुखदेव सभागार का हुआ भूमि पूजन

संवाददाता–सिद्धार्थनगर। सिविल सिद्धार्थ बार एसोसिएशन प्रांगण में बुधवार को "राजगुरुसुखदेव सभागार" के निर्माण के लिए भूमि पूजन एवं शिला पूजन कार्यक्रम विधि–विधान के साथ संपन्न हुआ। यह सभागार कपिलवस्तु विधायक श्यामधनी राही की विधायक निधि से बनाया जाएगा। कार्यक्रम की अगुवाई बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अखंड प्रताप सिंह ने की। इस दौरान सिडको के जेई भूपेंद्र सिंह की उपस्थिति में पूजा–अर्चना कर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया गया। मौके पर बड़ी संख्या में अधिवक्ता मौजूद रहे और उन्होंने उत्साहपूर्वक भाग लिया। उपस्थित प्रमुख अधिवक्ताओं में गंगाराम पांडे, परमात्मा प्रसाद मिश्रा, नजीर मलिक, विजय कुमार उपाध्याय, प्रभाकर मिश्रा, राघवेंद्र सिंह, रमेश पांडे, अनिल विश्वकर्मा, शेखर सिंह, कन्हैया पांडे, चंद्र भूषण मिश्रा, विनायक मिश्रा, विनोद शुक्ला, दुर्गेश द्विवेदी, सच्चिदानंद झा, दिव्य प्रकाश शुक्ला, इंदु कुमार सिंह, देवानंद श्रीवास्तव, दिनेश तिवारी, नागेंद्र पांडे, अरुण तिवारी, प्रशांत मिश्रा, पवन चंद्र शुक्ला, नरेंद्र भार्गव और प्रमोद दुबे सहित अन्य अधिवक्ता शामिल रहे। कार्यक्रम के बाद आयोजित सभा को संबोधित करते हुए अध्यक्ष अखंड प्रताप सिंह ने कहा कि "राजगुरुसुखदेव सभागार" का निर्माण बार एसोसिएशन के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। यह सभागार अधिवक्ताओं के लिए उपयोगी होगा, विशेषकर महिला अधिवक्ताओं को ध्यान में रखते हुए इसे मातृशक्ति को समर्पित किया जाएगा, जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा।

रात खाना खाकर सोने गया, सुबह गमछे से लटका मिला शिवम का शव

संवाददाता–गोरखपुर। गीडा थाना क्षेत्र के पिपरौली चौकी अंतर्गत नेवास गांव में 30 वर्षीय युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बुधवार सुबह उसका शव पुराने मकान में लोहे की खूंटी से गमछे के सहारे लटका मिला। घटना के बाद परिवार में कोहराम मच गया और पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। मृतक की पहचान शिवम मिश्रा के रूप में हुई है, जो अपने परिवार में सबसे छोटे पुत्र थे। परिजनों के अनुसार, मंगलवार रात को पूरा परिवार खाना खाकर सो गया था। बुधवार सुबह जब पिता मंगल मिश्रा घर के पुराने हिस्से में झाड़ू लगाने गए, तो उन्होंने शिवम को फंदे से लटका देखा। यह दृश्य देख वह घबरा गए और तुरंत चाकू से गमछा काटकर बेटे को नीचे उतारा, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी।

घटना की सूचना तत्काल डायल 112 पर दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। चौकी प्रभारी संतोष कुमार सिंह और थाना प्रभारी अश्वनी कुमार पाण्डेय ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। इसके बाद फॉरेंसिक टीम को बुलाकर साक्ष्य जुटाए गए। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

परिवार के मुताबिक, शिवम एक निजी विद्यालय में ड्राइवर के रूप में कार्यरत थे और परिवार के भरण–पोषण में सहयोग करते थे। परिवार में चार पुत्र और तीन पुत्रियां हैं, जिनमें से दो बेटियों की शादी हो चुकी है, जबकि एक की शादी अभी बाकी है। शिवम को बचपन से ही होनहार और जिम्मेदार बताया जा रहा है।

घटना के पीछे की वजह फिलहाल स्पष्ट नहीं हो सकी है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों की पुष्टि हो सकेगी। अभी तक परिजनों की ओर से कोई तहरीर नहीं दी गई है।

पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए जांच कर रही है। वहीं, इस घटना से नेवास गांव में शोक का माहौल है और लोग स्तब्ध हैं।

स्कूल बस की टक्कर से 18 माह के मासूम की मौत

संवाददाता–गोरखपुर। गोला थाना क्षेत्र के ग्राम धौसहर उर्फ बेलवाभारी में बुधवार सुबह एक दर्दनाक हादसे में स्कूल बस की टक्कर से 18 माह की मासूम बच्ची की मौत हो गई। घटना के बाद चालक बस समेत मौके से फरार हो गया। वहीं, मौके पर पंहुची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

जानकारी के अनुसार, सुबह करीब 6:30 से 7:00 बजे के बीच डेहरीभार मार्ग पर अपने घर के सामने खेल रही नित्या (18 माह) पुत्री सुनील कुमार अचानक तेज रफ्तार स्कूल बस की चपेट में आ गई। टक्कर से बच्ची दूर जा गिरी और गंभीर रूप से घायल हो गई। परिजन आनन–फानन में उसे इलाज के लिए गोला ले जा रहे थे, लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। दुर्घटनास्थल के पास मार्ग पर झाड़िया उगी हैं और अंधा मोड़ है, जिससे हादसे की आशंका पहले से बनी रहती है। मृतका के पिता ने थाने में तहरीर देकर आरोप लगाया है कि उपनगर गोला में संचालित एमसीए पब्लिक स्कूल की बस तेज गति से आकर बच्ची को टक्कर मारते हुए फरार हो गई। परिजनों का दावा है कि घटना के समय आसपास लगे कैमरों में डेहरीभार मार्ग से एमसीए स्कूल की बस तेज रफ्तार में गुजरते हुए दिखाई दे रही है। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस फरार बस चालक की तलाश में जुटी है।

टायर फटने से अनियंत्रित हुआ डीसीएम 23 सवार घायल, 3 की हालत गंभीर

संवाददाता–गोरखपुर। रामगढ़ताल थाना क्षेत्र में बुधवार को हाईवे पर एक तेज रफ्तार डीसीएम का टायर फटने से बड़ा हादसा हो गया। अनियंत्रित होकर वाहन सड़क पर पलट गया, जिससे उसमें सवार 23 लोग घायल हो गए। हादसे के बाद मौके पर अफरा–तफरी और चीख–पुकार मच गई।

जानकारी के अनुसार, सभी यात्री सिकरीगंज क्षेत्र के महादेव गांव से तरकुलहा देवी के दर्शन के लिए जा रहे थे। यात्रा के दौरान जैसे ही डीसीएम रामगढ़ताल इलाके के पास पहुंची, अचानक उसका टायर फट गया। तेज गति में होने के कारण चालक वाहन पर नियंत्रण नहीं रख सका और डीसीएम पलट गई।

हादसे के तुरंत बाद आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और राहत कार्य शुरू किया। सूचना मिलते ही पुलिस भी पहुंच गई। स्थानीय लोगों और पुलिस की मदद से सभी घायलों को बाहर निकाला गया और एंबुलेंस के जरिए जिला अस्पताल पहुंचाया गया।

घायलों में महिलाओं और बच्चों की भी संख्या बताई जा रही है। चिकित्सकों के अनुसार, तीन लोगों की हालत गंभीर बनी हुई है, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कर उपचार किया जा रहा है। अन्य घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद निगरानी में रखा गया है।

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, हादसा इतना तेज था कि वाहन पलटते ही उसमें सवार लोग इधर–उधर गिर गए। कई लोग वाहन के नीचे दब गए थे, जिन्हें काफी मशक्कत के बाद बाहर निकाला गया। प्रारंभिक जांच में हादसे की वजह टायर फटना बताया जा रहा है, हालांकि पुलिस अन्य पहलुओं की भी जांच कर रही है। प्रशासन की ओर से घायलों के समुचित इलाज की व्यवस्था कराई गई है। अधिकारियों का कहना है कि हादसे के कारणों की विस्तृत जांच की जा रही है और आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

एआई जागरूकता पर मिला सम्मान, गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज हुआ गोरखपुर का नाम

संवाददाता–गोरखपुर। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जागरूकता पर गोरखपुर का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज हो गया है। एआई फॉर आल अवेयरनेस प्रोग्राम की रूपरेखा ने एक सप्ताह की समय सीमा में 764187 ऑनलाइन पंजीकरण का विश्व कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। एमपीआईटी (महाराणा प्रताप इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी) ने टीसीएस (टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज) और अन्य संस्थानों के सहयोग से इस प्रोग्राम को शुरू किया है। इस प्रोग्राम में ऐतिहासिक और अभूतपूर्व पंजीकरण के लिए बुधवार को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के प्रतिनिधि ऋषि नाथ ने विश्व कीर्तिमान रचे जाने का प्रमाण पत्र मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और टाटा संस के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन को सौंपा। प्रमाण पत्र हैंडओवर करने का कार्यक्रम, एमपीआईटी में पूर्वी उत्तर प्रदेश के पहले सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के लोकार्पण समारोह के मंच पर हुआ। एमपीआईटी ने एआई फॉर आल अवेयरनेस प्रोग्राम के लिए पांच लाख पंजीकरण का लक्ष्य रखा था।

इसके लिए निर्धारित तिथि, 9 अप्रैल तक 764187 पंजीकरण हुए। इसके अंतर्गत दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर, महायोगी गुरु गोरखनाथ राज्य आयुष विश्वविद्यालय, एमपी पॉलिटेक्निक, आईटीएम गीडा, बीआईटी गीडा को भी साझा पहल में शामिल किया गया। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के प्रतिनिधि ने बताया कि ऑनलाइन पंजीकरण की प्रक्रिया को कड़े मानकों पर परखने के बाद आज विश्व कीर्तिमान का प्रमाण पत्र सौंपा गया है। पूर्णतः निशुल्क इस एआई अवेयरनेस प्रोग्राम में एआई का परिचय, जेनेरेटिव एआई टूल्स, प्रॉम्प्टिंग एंड प्रोडक्टिविटी, रिस्पांसिबल एआई यूज, साइबर हाइजीन, फ्रॉड प्रिवेंशन, पासवर्ड एंड ओटीपी सेफ्टी और सेफ डिजिटल प्रैक्टिसेज के बारे में विस्तृत प्रशिक्षण प्राप्त होगा।

कांग्रेस विधायक दल के समूह ने किए रामलला के दर्शन

संवाददाता–अयोध्या। कर्नाटक से कांग्रेस के विधायक दल का एक समूह बुधवार को अयोध्या पहुंचकर श्रीरामलला के दर्शन कर रहा है। दर्शन के बाद सभी विधायक दिल्ली वापस लौट जाएंगे। इस दल में टीबी जयचंद्र, अशोक पट्टन समेत करीब दस अन्य कांग्रेस विधायक शामिल हैं। कुछ विधायकों के निजी सहयोगी (पीए) भी उनके साथ मौजूद रहे।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि प्रार्थिनी कु0 प्रिया पाण्डेय (KM PRIYA PANDEY) पत्नी अजीत पाण्डेय ग्राम असियापार डिवहारी, पोस्ट पडरी, जिला बस्ती, (उ.प्र.)–272170 की निवासिनी है। निजी कारणों से मैंने अपना नाम बदलकर दीपिका DIPIKA कर लिया है। अब मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाय ।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा माध्यमिक शिक्षा परिषद उ.प्र. हाई स्कूल वर्ष **2017** अनुक्रमांक **2219821** का अंक पत्र एवं सह प्रमाण–पत्र (सनद) वास्तव में खो गया है।

(राजित रमन)
पुत्र– तिलकराज
मोहल्ला पिकौरा बख्श
गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.)

कार्यालय ग्राम पंचायत डुमरी वि.खं. रूधौली, जिला-बस्ती

अल्पकालिक निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत **डुमरी** द्वारा पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त केन्द्रीय वित्त/मनरेगा/वीबी–जीरामजी/राष्ट्रीयग्राम स्वराज/अभियान/स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण/एस०एल०डब्लू०एम०/सांसद निधि/विधायक निधि / अन्त्येष्टि स्थल का विकास/ मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना सहित अन्य योजनान्तर्गत योजना वर्ष 2026–27 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यों हेतु ईट, ईट गिट्टी, सीमेंट, लोकल सैड, बालू, मोरंग, मिट्टी दुलाई सहित, पत्थर गिट्टी, इण्टरलाकिंग ईट 80 एम०एम०, सरिया, ऐंगिल, फेंसिंग जाली, जी०आई० शीट, हयूम पाइप 250 एम०एम० व्यास से 900 एम०एम० व्यास तक सभी साइज, बेंच, डस्टबिन, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, विद्युत व इलेक्ट्रानिक उपकरण, इण्डिया मार्का हैण्डपम्प मम्मत व रिबोर से जुडे सामग्री व उपकरण, पेंटिंग, पलम्बिंग सामग्री, फागिंग मशीन व रसायन, सफाई उपकरण, कुर्सी, मेज, अलमारी, स्टेशनरी, साइनबोर्ड, शिलापट्ट, ठेला, ई रिक्शा आदि के आपूर्ति हेतु निविदा दर तथा वांछित एक प्रपत्र बन्द लिफाफे में कार्यालय ग्राम पंचायत **डुमरी** के निविदा बाक्स में दिनांक 23–04–2026 तक अपरान्ह 11:00 बजे तक डाली जायेगी। निविदा उसी दिन अपरान्ह 01:00 बजे आपूर्तिकर्ता या उसके प्रतिनिधि के उपस्थिति में कार्यालय ग्राम पंचायत में खोली जायेगी तथा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण की जायेगी। धरोहरं धनराशि मु० 5000–00 (पांच हजार) होगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 16–04–2026 से दिनांक 22–04–2026 तक कार्यालय दिवस में प्राप्त किया जा सकता है।

1– जिस आपूर्तिकर्ता का दर सबसे कम होगा उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2– आपूर्तिकर्ता का जी०एस०टी० का रजिस्ट्रेशन तथा आयकर देने का प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है।
3– कार्यालय ग्राम पंचायत **डुमरी** द्वारा नामित कर्मचारियों तथा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में निविदा निर्धारित तिथि, समय व स्थान पर खोला जायेगा।
4– सामग्री / उपकरण की आपूर्ति ग्राम पंचायत **डुमरी** की परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्य स्थल पर करनी होगी अलग से कोई ढुलाई व्यय देय नही होगी।
5– जो दरें प्रस्तुत की जाय जी०एस०टी० तथा कार्टेज एवं अन्य कर जोडकर प्रस्तुत की जाय।
6– सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत के आदेश पर की जायेगी।
7– सामग्री / उपकरण की मात्रा तथा समय आवश्यकतानुसार घटाई व बढ़ाई जा सकती है।
8– प्रस्तुत दरें पी०डब्लू०डी० द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नही होगा।
9– आपूर्तिकर्ता के बिल से नियमानुसार आयकर तथा जी०एस०टी० काटी जायेगी।
10– धरोहर की धनराशि नकद अथवा राष्ट्रीयकृत बैंक के एफ०डी०आर० पत्र/एन०एस०सी०/डाक घर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत **डुमरी** के नाम बन्धक हो संलग्न करना अनिवार्य है।
11– आपूर्ति दर स्वीकृत होने के बाद ग्राम पंचायत के आपूर्ति आदेश से सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति करना अनिवार्य होगा।
12– ग्राम प्रधान / सचिव/पंचायत सहायक/रोजगार सेवक / तकनीकी सहायक/कन्सल्टिंग इन्जीनियर तथा उनके सगे संबंधी रिश्तेदार द्वारा निविदा प्रस्तुत नहीं की जायेगी।
13– आपूर्तिकर्ता को भुगतान अवर अभियन्ता आर०ई०डी०/अवर अभियन्ता / कन्सल्टिंग अभियन्ता के द्वारा गुणवत्ता एवं मात्रा प्रमाणित होने एवं मापन के बाद ही होगा।
14– निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 50 रू0 है पर ही स्वीकृत की जायेगी।
15– सामग्री / उपकरण आपूर्ति के सम्बन्ध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्य दिवस को ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
16– निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास होगा।

(पंकज सिंह)	(कु0 रंजना चौधरी)
प्रधान	सचिव
ग्राम पंचायत–**डुमरी**	ग्राम पंचायत–**डुमरी**

पत्रांक/ मेमो/टेण्डर विज्ञप्ति 2026/27 दिनांक 15.04.2026

कार्यालय ग्राम पंचायत आमबारी वि.खं. रूधौली, जिला-बस्ती

अल्पकालिक निविदा आपूर्ति सूचना

ग्राम पंचायत **आमबारी** द्वारा पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त केन्द्रीय वित्त/मनरेगा/वीबी–जीरामजी/राष्ट्रीयग्राम स्वराज/अभियान/स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण/एस०एल०डब्लू०एम०/सांसद निधि/विधायक निधि / अन्त्येष्टि स्थल का विकास/ मुख्यमंत्री पंचायत प्रोत्साहन पुरस्कार योजना सहित अन्य योजनान्तर्गत योजना वर्ष 2026–27 में स्वीकृत तथा कराये जाने वाले कार्यों हेतु ईट, ईट गिट्टी, सीमेंट, लोकल सैड, बालू, मोरंग, मिट्टी दुलाई सहित, पत्थर गिट्टी, इण्टरलाकिंग ईट 80 एम०एम०, सरिया, ऐंगिल, फेंसिंग जाली, जी०आई० शीट, हयूम पाइप 250 एम०एम० व्यास से 900 एम०एम० व्यास तक सभी साइज, बेंच, डस्टबिन, सोलर लाइट, स्ट्रीट लाइट, विद्युत व इलेक्ट्रानिक उपकरण, इण्डिया मार्का हैण्डपम्प मम्मत व रिबोर से जुडे सामग्री व उपकरण, पेंटिंग, पलम्बिंग सामग्री, फागिंग मशीन व रसायन, सफाई उपकरण, कुर्सी, मेज, अलमारी, स्टेशनरी, साइनबोर्ड, शिलापट्ट, ठेला, ई रिक्शा आदि के आपूर्ति हेतु निविदा दर तथा वांछित एक प्रपत्र बन्द लिफाफे में कार्यालय ग्राम पंचायत **आमबारी** के निविदा बाक्स में दिनांक 24–04–2026 तक अपरान्ह 11:00 बजे तक डाली जायेगी। निविदा उसी दिन अपरान्ह 01:00 बजे आपूर्तिकर्ता या उसके प्रतिनिधि के उपस्थिति में कार्यालय ग्राम पंचायत में खोली जायेगी तथा समस्त औपचारिकताएं पूर्ण की जायेगी। धरोहरं धनराशि मु० 5000–00 (पांच हजार) होगी। निविदा प्रपत्र दिनांक 16–04–2026 से दिनांक 23–04–2026 तक कार्यालय दिवस में प्राप्त किया जा सकता है।

1– जिस आपूर्तिकर्ता का दर सबसे कम होगा उसे ग्राम पंचायत द्वारा कराये जाने वाले कार्य हेतु सूचित किया जायेगा।
2– आपूर्तिकर्ता का जी०एस०टी० का रजिस्ट्रेशन तथा आयकर देने का प्रमाण पत्र की प्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य है।
3– कार्यालय ग्राम पंचायत **आमबारी** द्वारा नामित कर्मचारियों तथा आपूर्तिकर्ताओ की उपस्थिति में निविदा निर्धारित तिथि, समय व स्थान पर खोला जायेगा।
4– सामग्री / उपकरण की आपूर्ति ग्राम पंचायत **आमबारी** की परिधि में स्वीकृत दर से निर्धारित कार्य स्थल पर करनी होगी अलग से कोई ढुलाई व्यय देय नही होगी।
5– जो दरें प्रस्तुत की जाय जी०एस०टी० तथा कार्टेज एवं अन्य कर जोडकर प्रस्तुत की जाय।
6– सामग्री की आपूर्ति सचिव ग्राम पंचायत के आदेश पर की जायेगी।
7– सामग्री / उपकरण की मात्रा तथा समय आवश्यकतानुसार घटाई व बढ़ाई जा सकती है।
8– प्रस्तुत दरें पी०डब्लू०डी० द्वारा स्वीकृत दर से अधिक मान्य नही होगा।
9– आपूर्तिकर्ता के बिल से नियमानुसार आयकर तथा जी०एस०टी० काटी जायेगी।
10– धरोहर की धनराशि नकद अथवा राष्ट्रीयकृत बैंक के एफ०डी०आर० पत्र/एन०एस०सी०/डाक घर बचत पत्र के रूप में ग्राम पंचायत **आमबारी** के नाम बन्धक हो संलग्न करना अनिवार्य है।
11– आपूर्ति दर स्वीकृत होने के बाद ग्राम पंचायत के आपूर्ति आदेश से सात दिवस के अन्दर सामग्री आपूर्ति करना अनिवार्य होगा।
12– ग्राम प्रधान / सचिव/पंचायत सहायक/रोजगार सेवक / तकनीकी सहायक/कन्सल्टिंग इन्जीनियर तथा उनके सगे संबंधी रिश्तेदार द्वारा निविदा प्रस्तुत नहीं की जायेगी।
13– आपूर्तिकर्ता को भुगतान अवर अभियन्ता आर०ई०डी०/अवर अभियन्ता / कन्सल्टिंग अभियन्ता के द्वारा गुणवत्ता एवं मात्रा प्रमाणित होने एवं मापन के बाद ही होगा।
14– निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त प्रपत्र जिसका मूल्य 50 रू0 है पर ही स्वीकृत की जायेगी।
15– सामग्री / उपकरण आपूर्ति के सम्बन्ध में शर्ते व अन्य जानकारी किसी भी कार्य दिवस को ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।
16– निविदा को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत के पास होगा।

(विश्वनाथ)	(कु0 रंजना चौधरी)
प्रधान	सचिव
ग्राम पंचायत–**आमबारी**	ग्राम पंचायत–**आमबारी**

पत्रांक/ मेमो/टेण्डर विज्ञप्ति 2026/27 दिनांक 15.04.2026

अदालती नोटिस

इश्तहार मजरिया अदालत– सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्ण वाद सं0 394/2025
राकेश कुमार–सायल
1. राकेश कुमार पुत्र मोल्हू राम उर्फ मजनू मिस्त्री साकिन ग्राम मझौवा चौधरी पोस्ट ऐनपुर तप्पा गौर परगना बस्ती पश्चिम तहसील हर्रैया जिला–बस्ती
तारीख पेशी 18–04–2026
दरख्वास्त मुसम्मा
वास्ते हुसूल सर्टीफिकेट वसूल कर्जा व विकालत हाय दरख्वास्त मुसम्मा मुतवफ्फा अपने बमूजिब एक्ट 7 सन 1889 ई0 वकैद

हरगाह मुसम्मा ने दरख्वास्त हुसूल सर्टीफिकेट गुजरानी है और तारीख माह सन ई0 वास्ते समाअत दरख्वास्त के मुकर्रर हुई है। लिहाजा यह इश्तिहार जारी किया जाता है कि किसी को निस्बत के उज्र हो या असालतन या वकालतन वक्त 10 बजे सुबह अदालत सिविल जज (जू0डि0) बस्ती बतारीख पेशी 18–04–2026 मुकर्रर हाजिर होकर उज्र अपना पेश करें। दरसूरत इनकजाय तारीख मजकूर के फिर उज्र किसी का सुना न जायेगा और हुक्म मुनासिब निस्बत दरख्वास्त मजकूर के सादिर होगा।
अलमरकूम माह सन 20 ई0।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्ररह समायत अपील
सिविल निगरानी सं0–30/2025
अदालत– श्रीमान जिला जज महोदय बस्ती जिला–बस्ती
अनूप कुमार आदि
बनाम
शिवराज (मृतक) आदि
6. बिरेन्द्र कुमार उम्र करीब 66 साल पुत्र सूर्य प्रसाद निवासी ग्राम भटिनिया तप्पा बनगवा परगना अमोढ़ा तहसील हर्रैया जिला बस्ती
तारीख पेशी 06–05–2026
अपील बनराजी के अदालत मुकाम बस्ती
मयरिखा महीना सन् 20 ई0
रेस्पान्डेन्ट

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 06 महीना 05 सन 2026 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है। अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जबाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी। आज बतारीख माह सन 20 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।
द0 हाकिम

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा दरख्वास्त हुसूल हुक्म मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश (आर्डर 9 कायदा 9) (2)
अदालत–श्रीमान सिविल जज (जू0डि0) बस्ती जिला–बस्ती
प्रकीर्णवाद सं0– 200/2025
मूलवाद सं0–910/2025
चन्द्रमती पाण्डेय (मृतक)
बनाम
दिनेश कुमार शुक्ल
1. दिनेश कुमार शुक्ल उम्र लगभग 55 साल पुत्र रामशंकर ग्राम सिलवटिया तप्पा गौर परगना बस्ती पश्चिम तहसील हर्रैया जिला बस्ती
तारीख पेशी 30–04–2026

हरगाह मुद्दई मजकुरूसदर ने इस अदालत में दरख्वास्त हुकूम मुशहर मन्सूखी डिसमिसी नालिश नाबुदा हस्ब हिदायत अदालत हाजा बतारीख माह सन ई0 पेश को है।

लिहाजा आपको इत्तिला दी जाती है कि आप इस अदालत में बतारीख 30 माह 04 सन 2026 या असालतन या बजरिये वकील अदालत हाजा या मुख्तार मजाज हस्ब जाप्ता और वाकिफ हाल मुकदमा में हाजिर होकर वजह (अगर कोई हो) जाहिर करें कि नाबुर्दा की दरख्वास्त क्यों न मन्जूर किया जाय।

मेरे दस्तखत और मुहर अदालत से आज बतारीख माह सन 20 ई0 जारी किया गया।
द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती
संस्थापक सम्पादक स्व. दिनेश चन्द्र पाण्डेय
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रबन्ध सम्पादक–**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक–**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**
अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय–
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय–
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय–
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो0 9336715406, 8400925463
ई.मेल bhartiyabasti@gmail.com
dainikbhartiyabasti@gmail.com